



मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जनवरी - जून 2021

RNI Reference No.: 1322876 Title Code : MPHIN34795 Year : 5 Edition 17



माननीय वन मंत्री डॉ. कुँवर विजय शाह द्वारा वन विहार में रात्रि सफारी का शुभारंभ किया गया





श्रीमती अर्चना पटेल, सहायक वन संरक्षक (सा.वा. रीवा)

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जनवरी - जून 2021



Patron :

Ramesh Kumar Gupta

*Principal Chief Conservator of Forests
and Head of Forest Force
Satpura Bhawan, Bhopal*

Editorial Board :

Atul Kumar Jain

*Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)*

K. Raman

*Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Green India Mission)*

Aseem Shrivastava

*Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Wildlife)*

Chitranjan Tyagi

*Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Development/ JFM)*

Atul Shrivastav

*Additional Principal Chief Conservator of Forests
(M.P. State Minor Forest Produce Trading &
Development Co-operative Federation)*

Ramesh Kumar Shrivastava

*Additional Principal Chief Conservator of Forests
(CAMPA)*

Capt. Anil Kumar Khare

*Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Madhya Pradesh Rajya Van Vikas Nigam Limited)*

Alvin Burman

DCF (Research, Extension and Lok Vaniki)

B.K. Dhar

Prachar Adhikari (Samanvay)

Editor :

*Dr. Sanjay Kumar Shukla
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lokvaniki) Bhopal*

Contact :

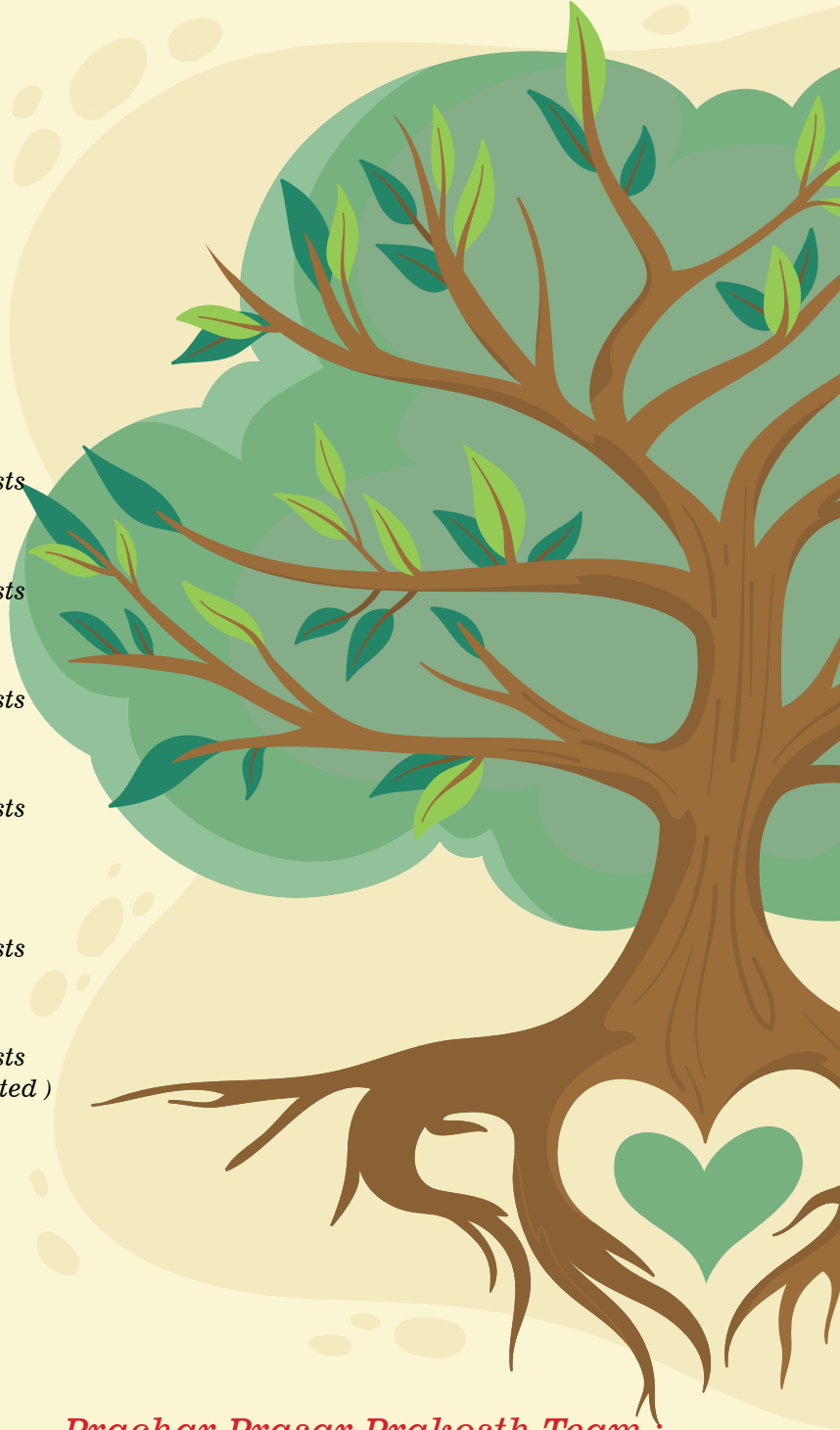
*Prachar Prasar Prakosth, Room No. 140,
Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in*

Prachar Prasar Prakosth Team :

*Deepak Meshram
Gaurav Rajput*

Owner & Publisher :

*Prachar Prasar Prakosth (M.P.F.D.)
Printed by Madhya Pradesh Madhyam
Bhopal
Contact : 0755-2524293*



वनांचल संदेश

ॐ जनवरी - जून 2021 ॐ

• वानिकी विकास के नए आयाम गढ़ता वन विभाग	8
• पेंच टाइगर रिजर्व में पर्यटन के क्षेत्र में नई पहल	11
• ग्रीन इंडिया मिशन अंतर्गत रोपणी उन्नयन कार्य	15
• चम्बल घड़ियालों को कूनो में मिला नया घर	19
• भोपाल के संजीवनी और लघु वन उपज द्वारा तैयार की गई हर्बल गुलाल	21
• राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य	22
• Sustaining Tiger Population and Managing Human-Animal Interaction" Future Challenges in Panna Tiger Reserve, MP	24
• वन ग्राम "चबूतरा" के ग्रामवासियों से डॉ. कुँवर विजय शाह जी माननीय वनमंत्री, मध्यप्रदेश ने की चर्चा	31
• गणतंत्र दिवस पर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री राजेश श्रीवास्तव द्वारा वन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उत्कृष्ट कार्य के लिये पुरस्कृत किया गया	33
• वन एवं वन्य प्राणियों की सुरक्षा में वन विभाग की सफलतापूर्वक कार्रवाई	36
• केन्द्रीय रोपणी, परियट सामाजिक वानिकी वृत्त, जबलपुर	38
• MUNNA : The Legend	42
• चारागाह विकास कार्य ग्रीन इंडिया मिशन के अंतर्गत, श्योपुर वनमण्डल	44
• The Caring Father	48
• सागौन रूट-शूट/पौधों की रोपणी में तैयारी का प्रशिक्षण कार्यक्रम	53
• वन व वन्य प्राणियों की रक्षा एवं संवर्धन के उत्कृष्ट कार्य करने वाले म.प्र. राज्य वन विकास निगम के कर्मठ कर्मचारी पुरस्कृत	55
• बांस कृषि के लाभ	57
• 5 जून, विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर डॉ. कुँवर विजय शाह जी माननीय वनमंत्री, मध्यप्रदेश द्वारा वृक्षारोपण	61
• दुर्लभ प्रजाति गुग्गल (<i>commiphora wightii</i>) के औषधिय गुण	62
• तेन्दूपत्ता संग्राहक होंगे संबल योजना में शामिल- मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान	63
• कोविड 19 महामारी परिस्थिति में वनमण्डल भोपाल द्वारा शासकीय निर्देशों का पालन करते हुए वैक्सीनेशन	65
• राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर	66
• माह जनवरी 2021 से माह जून 2021 की उत्कृष्ट उपलब्धियाँ	73
• वर्ष 2021 में लक्ष्य से अधिक तेन्दू पत्ते का संग्रहण	75
• कविता : भगीरथ के प्रयासों का.....!	76
• भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति	77
• अखबारों के आईने में	78
• वानिकी गतिविधियां कार्टूनैस्ट की नजर में	79



क्र. 608/मुगका/2021

दिनांक 23/06/2021

शिवराज सिंह चौहान

मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

सन्देश

प्रदेश में पौधा रोपण के प्रति जन साधारण में जागरूकता लाने के लिए प्रतिवर्ष हरियाली महोत्सव मनाया जाता है। प्रदेश में वन सम्पदा के निरंतर विकास तथा वनों की सुरक्षा के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं, किन्तु मात्र शासन के प्रयासों से इन योजनाओं से अपेक्षित परिणाम मिलना संभव नहीं है। प्रदेश को हरा-भरा बनाने की दिशा में जन साधारण की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

प्रदेश की वन नीति का मुख्य आधार वनों के बेहतर प्रबंधन से पर्यावरण संरक्षण तथा स्थानीय ग्राम समुदाय को रोजगार उपलब्ध कराना है। वन प्रबंधन में ग्रामीणों की सहभागिता को अधिक व्यावहारिक और पारदर्शी बनाने तथा संयुक्त वन प्रबंधन प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिए कानूनी आधार देने की व्यवस्था की गई है। इसके तहत बिगड़े हुए संरक्षित एवं आरक्षित वनों का प्रबंधन ग्राम सभा द्वारा गठित ग्राम वन समिति के माध्यम से किया जाएगा।

प्रदेशवासियों से अनुरोध है कि हरियाली महोत्सव को जन आंदोलन का स्वरूप देते हुए पौधारोपण के साथ ही पौधों की सुरक्षा भी करें। राज्य के हरित क्षेत्र में वृद्धि कर प्रदेश के पर्यावरण को स्वच्छ रखने व प्रकृति को प्राणवायु से समृद्ध करने के उद्देश्य से जनसहभागिता के साथ व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण का "अंकुर कार्यक्रम" प्रारंभ किया गया है। मेरी अपील है कि आप इस कार्यक्रम से सक्रिय होकर जुटें एवं विभिन्न अवसरों पर वृक्ष लगाएं।


(शिवराज सिंह चौहान)

डॉ. कुँवर विजय शाह



मंत्री
वन विभाग म.प्र. शासन

क्रमांक...२१८...मंत्री/वन/

दिनांक...३०/०६/२०२१

हरियाली महोत्सव – 2021

संदेश

जन समुदाय में पौधारोपण के प्रति चेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष हरियाली महोत्सव मनाया जाता है। प्रदेश को वन समृद्ध बनाने के लिए वन संसाधनों को बेहतर प्रबंधन आवश्यक है।

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के कुशल नेतृत्व में राज्य शासन ने वनों के संवहनीय विकास के साथ ग्रामवासियों को वनोपज पर आधारित रोजगार के नये अवसर उपलब्ध कराने पर विशेष बल दिया है। संयुक्त वन प्रबंधन समितियों द्वारा वनों की सुरक्षा और विकास के कार्यों में पारदर्शिता लाने के साथ ही ग्रामीणों की सहभागिता को व्यापक करने के लिए अनेक नीतिगत निर्णय लिए गए हैं। निजी क्षेत्र में पौधारोपण को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किये जा रहे हैं।

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रतिदिन एक पौधा लगाने की अभिनव पहल की है। जनसाधारण पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ने के साथ ही पौधारोपण के प्रति उनमें जागरूकता भी बढ़ी है।

आप सभी से अनुरोध है कि वन संरक्षण और विकास की योजनाओं में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करें। पौधारोपण के लिए उपयुक्त पौधे निकटतम वन रोपणी से प्राप्त कर सकते हैं। इस कार्य में पंचायत संस्थाओं, शिक्षण तथा स्वैच्छिक संगठनों की महत्ती भूमिका है।

हरियाली महोत्सव की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

(डॉ. कुँवर विजय शाह)
मंत्री, वन
मध्य प्रदेश शासन

भोपाल : बी-21, चार इमली, भोपाल

मंत्रालय फोन नं. : 0755-2708390, निवास : 0755-2441081, 2441377

खण्डवा : सी-1, नर्मदा सागर कॉलोनी, हरसूद नाके के पास, खण्डवा (म.प्र.) फोन : 0733-2226900

संदेश

विभाग की त्रैमासिक पत्रिका 'वनांचल संदेश' प्रकाशन के चार वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई। वन संसाधनों से समृद्ध म.प्र. में वन एवम् वनवासी एक-दूसरे के परिपूरक हैं। वानिकी विकास तथा विस्तार से वनवासी कल्याण के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इस दिशा में विभाग द्वारा किये जा रहे प्रयासों को वनांचल संदेश के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुतिकरण किया जा रहा है।

विभाग द्वारा वृक्षारोपण तत्सम्बद्ध विषय एवम् उससे जुड़ी चुनौतियों को किस प्रकार मूर्त रूप दिया गया है, उसकी झलकियों की प्रस्तुति बड़े संजीदगी एवम् रोचक पूर्ण ढंग से की गई है। साथ ही एक परिवर्तित रूप में अनुसंधान विस्तार की झलक दिख रही है। समय-समय पर प्रचलित गतिविधियों को सरुचिपूर्ण रूप से दर्शाना इस अंक का आकर्षण है।

इस अंक में वन एवम् वन्यजीव के संरक्षण से संबंधित विभाग द्वारा किये गये सफलतम कार्यों का उल्लेख किया गया है। राष्ट्रीय चंबल अभ्यारण्य में घड़ियालों के संरक्षण को माननीय वनमंत्री जी द्वारा प्रोत्साहित किया गया। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान को UNESCO द्वारा बायोस्फियर रिजर्व की सूची में सम्मिलित किया गया है, जो विभाग के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

वनांचल संदेश आगे चलकर जन सामान्य हेतु एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर आये इसी शुभकामनाओं के साथ।



अतुल कुमार जैन
भा.व.से.

प्रधान मुख्य वन संरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल



सम्पादकीय

प्रस्तुत अंक जनवरी-जून, 2021 वनांचल संदेश विशेषांक के रूप में स्मरणीय रहेगा। सामान्यतः यह त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित की जाती है, परन्तु कोविड-19 महामारी काल के कारण पत्रिका को प्रकाशन हेतु अंतिम स्वरूप नहीं दिया जा सका। अतः इस अंक को छः माह जनवरी-जून, 2021 के रूप में प्रकाशित किये जाने का निर्णय लिया गया।

इस अंक में वन विभाग द्वारा वन एवम् वन्य प्राणी के संरक्षण हेतु वानिकी विकास की नयी उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया है। माननीय वनमंत्री डॉ. कुँवर विजय शाह जी द्वारा वन विहार में रात्रि सफारी एवम् पेंच टाइगर रिजर्व में पर्यटन के क्षेत्र में की गई नई पहल इस अंक का प्रमुख आकर्षण है। कोविड-19 के व्यापक प्रभाव के कारण वन एवम् वन्यप्राणी प्रबंधन, पौध तैयारी, वृक्षारोपण, अग्नि प्रकरण जैसे महत्वपूर्ण विषय भी चुनौतिपूर्ण रूप में विभाग के समक्ष आये, जिसका सफलतापूर्वक उद्देश्यों के अनुरूप क्रियान्वयन किया गया।

प्रतिवर्ष की भांति, अनुसंधान विस्तार एवम् लोकवानिकी, ग्रीन इन्डिया मिशन, वन्यप्राणी शाखा, राज्य वन विकास निगम, बांस मिशन, राज्य लघु वनोपज संघ एवम् विभाग की अन्य शाखाओं द्वारा उल्लेखनीय कार्य किये गये एवम् वानिकी कार्यों के माध्यम से वनों पर आश्रित समुदाय को रोजगार भी उपलब्ध कराया गया। वन विभाग द्वारा कोविड-19 महामारी से बचाव एवम् रोकथाम हेतु जागरुकता एवं टीकाकरण अभियान सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा।

प्रदेश में जन भागीदारी द्वारा वानिकी गतिविधियों के क्रियान्वयन से वानिकी विकास एवं संवर्धन के बेहतर परिणाम मिले, इसी के साथ ही बांस प्रबंधन में वन समिति की भूमिका तथा आजीविका विषय को इस अंक में प्रभावी ढंग से दर्शाया गया है।

आशा है कि आप सभी के सक्रिय सहयोग से म.प्र. शासन, वन विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियों को जन साधारण तक पहुँचाने में वनांचल संदेश का यह विशेषांक अपने उद्देश्यों में सफल होगा।

शुभकामनाओं सहित।



डॉ. संजय कुमार शुक्ला

भा.व.से.

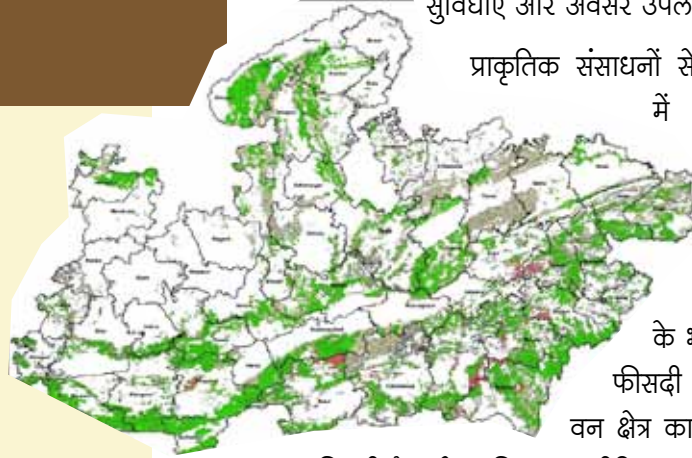
अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल

वानिकी विकास के नए आयाम गढ़ता वन विभाग

आलेख- डॉ. कुँवर विजय शाह मंत्री,
वन विभाग, मध्यप्रदेश

प्रदेश में स्थापित वनों के संरक्षण और संवर्धन के लिए मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रभावी पहल की गई है। इसी का परिणाम है कि वनों के साथ-साथ इस पर आश्रित ग्रामीणों की स्थिति में सुधार परिलक्षित हुआ है। वानिकी विकास की दिशा में अनेकानेक नीतिगत निर्णय लिए गए हैं, जिसके फलस्वरूप वन और वन्य-प्राणियों के बेहतर प्रबंधन के साथ ही वनों पर आश्रित वनवासियों के जीवन-स्तर में सुधार लाया जा सका है। यह सिलसिला अनवरत रूप से जारी है।

देश में सबसे अधिक बाघ इसी प्रदेश में हैं। पिछले साल बाघों की संख्या 526 होने के साथ प्रदेश को एक बार दोबारा टाइगर स्टेट का दर्जा मिला है। इसी तरह तेंदुओं की संख्या के मामले में भी हमारे प्रदेश ने कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्य को पीछे छोड़कर तेंदुआ स्टेट का दर्जा मिलने का गौरव हासिल किया है। प्रदेश में 3 हजार 421 तेंदुओं की संख्या पाई गई। देश में उपलब्ध तेंदुओं की संख्या में से 25 प्रतिशत अकेले मध्यप्रदेश में पाए गए हैं। प्रदेश में 13 राष्ट्रीय उद्यान और 24 अभ्यारण्य स्थित हैं। मुकुन्दपुर में सफेद बाघ सफारी, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू भोपाल और रायसेन में तितली पार्क है। वन्य-प्राणी संरक्षण के क्षेत्र में पर्यटकों के लिए बेहतर सुविधाएँ और अवसर उपलब्ध कराए गए हैं।



प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर मध्यप्रदेश में 94 हजार 689 वर्ग किलोमीटर (64,68,900 हेक्टेयर) कुल वन क्षेत्र है, जो राज्य के भू-भाग का 30.72 फीसदी और देश के कुल वन क्षेत्र का तकरीबन 12.38

फीसदी है। प्रदेश की वन नीति-2005 से लागू है। वन विभाग दो मोर्चों पर एक साथ काम कर रहा है। वन तथा वन्य जीवों की सुरक्षा को प्राथमिकता में रखते हुए उनके संवर्धन के साथ वनों पर आश्रित ग्रामीणों के सामाजिक-आर्थिक विकास की दिशा में असरदार पहल की गई है।

राज्य सरकार का यह दृढ़ संकल्प है कि वानिकी के जरिए आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तक विभागीय योजनाओं का लाभ



पहुँचना चाहिए, ताकि उन्हें मुख्य-धारा से जोड़कर आर्थिक रूप से समृद्ध किया जा सके। वन विभाग वनों की सुरक्षा और विकास के साथ-साथ वनों पर आश्रित वनवासियों के कल्याण के प्रति गंभीरता से कार्य कर रहा है।

7 करोड़ मानव दिवस का रोजगार

प्रदेश के ग्रामीण और आदिवासी बहुल क्षेत्रों में हरेक साल तकरीबन 7 करोड़ मानव दिवस का रोजगार उपलब्ध कराया जाता है। बाँस, चारा उत्पादन एवं लाख उत्पादन के माध्यम से एक लाख से अधिक ग्रामीणों को वानिकी गतिविधियों के माध्यम से आजीविका उपलब्ध कराई जा रही है। विभाग में प्रत्येक वन मण्डल द्वारा 10 वर्ष की कार्य-योजना तैयार कर वनों का प्रबंधन किया जाता है। योजना के माध्यम से कम घनत्व वाले वन क्षेत्रों में वनीकरण भी किया जाता है। इसके साथ ही बिगड़े वनों का सुधार एवं सघन वनों में पुनरुत्पादन के लिए सहायक वन वर्धनिक कार्य, सीमा एवं कठिन सुरक्षा के कार्य कराए जाते हैं।

आत्म-निर्भर म.प्र. में विभाग की गतिविधियाँ

प्रदेश सरकार ने आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश रोडमैप-2023 के रूप में महत्वाकांक्षी पहल को मूर्त रूप देने के लिए वन विभाग द्वारा कार्य-योजना तैयार की जा रही है। इसमें 'बफर में सफर' मुहिम के माध्यम से मानसून पर्यटन को बढ़ावा, टाईगर सफारी विकसित करना, लकड़ी/बाँस के प्र-संस्करण और मूल्य संवर्धन के लिए दो विशेष आर्थिक क्षेत्रों का विकास, 20 बाँस क्लस्टरों का व्यवस्थित विकास, प्रदेश की वनोपज का मध्यप्रदेश उत्पाद के रूप में जी.आई. टैगिंग, वनोपज के बेहतर मूल्य के लिए वनोपज मूल्य संवर्धन विकास, वन आधारित उद्यमों को प्रोत्साहन, उपयुक्त हैबिटेट में चीता को लाना, बाघों का घनत्व बढ़ाने और वन स्थिरता को बढ़ावा दिए जाने के लिए बाघों को अन्य राष्ट्रीय उद्यानों में शिफ्ट करना, वनों के बाहर वृक्ष आवरण बढ़ाने में शासकीय गैर वन भूमि पर वृक्षारोपण की पहल और भू-अभिलेखों का डिजिटलीकरण कर पारदर्शिता को बढ़ाने जैसे कार्य किये जायेंगे।

वन रोपणियों में पौध तैयारी

प्रदेश में 11 अनुसंधान और विस्तार वृत्तों की 170 अनुसंधान और विस्तार रोपणियों में विभिन्न प्रजाति के 4 करोड़ 13 लाख पौधे उपलब्ध हैं। विभागीय वृक्षारोपण एवं गैर-वानिकी

क्षेत्रों में रोपण के लिए आवश्यक पौधों की तैयारी, उपलब्ध पौधों का रख-रखाव और अनुसंधान विस्तार नर्सरियों के उन्नयन का लक्ष्य रखा गया है। रोपणियों के पौधों के ऑनलाइन संधारण के लिए नर्सरी मैनेजमेन्ट विकसित किया गया है। कुछ रोपणियों में सी.सी.टी.वी. कैमरे स्थापित कर रोपणियों की सुरक्षा और निगरानी की जा रही है।



संयुक्त वन प्रबंधन

विभाग की कार्यप्रणाली में 'जन' का महत्वपूर्ण स्थान है। वन-जन को समन्वित कर वानिकी में भागीदारी का अंश बढ़ाने के साथ ही जन की सक्रियता बढ़ाने के उद्देश्य से संयुक्त वन प्रबंधन की विचारधारा को अपनाया गया है।



संयुक्त वन प्रबंधन में 10 हजार 141 ग्राम वन समिति, 4419 वन सुरक्षा समिति और 1044 ईको विकास समिति गठित हैं। वन समितियों की कुल संख्या 15 हजार 604 है।



इनके माध्यम से 79 हजार 705 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्रों का प्रबंधन किया जा रहा है। वन समितियों में 33 प्रतिशत महिलाओं की सदस्यता आरक्षण के साथ ही अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के पद में से एक महिला की नियुक्ति अनिवार्य की जाकर महिला सशक्तिकरण को प्रभावी बनाया गया है। वन संरक्षण तथा वन संवर्धन के प्रयासों में जन-भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए बसामन मामा स्मृति वन एवं वन्य-प्राणी संरक्षण योजना चालू है।

वन संरक्षण

विभाग वनों की सुरक्षा और अवैध कटाई को सख्ती से रोकने में जुटा हुआ है। वन अपराधों की गोपनीय सूचनाओं के लिए मुखबिर तन्त्र को प्रभावी बनाया गया है। वन अपराधों की समय-सीमा में विवेचना के अनुश्रवण के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है। वन्य-प्राणी संरक्षित क्षेत्रों में 1490 वायरलेस-सेट की लायसेंस को मंजूरी प्राप्त हो गई है। वन अपराधों की रोकथाम के लिए वृत्त मुख्यालय पर उड़नदस्ता कार्यरत है। वन सुरक्षा में संयुक्त वन प्रबंधन समितियों का उपयोग भी किया जा रहा है। वन भूमि पर अतिक्रमण में बे-दखली के लिए भारतीय वन अधिनियम-1927 की धारा 80 (अ) में वैधानिक कार्रवाई कर वन भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराया जाता है।

संवेदनशील क्षेत्रों में सुरक्षा-निगरानी

संवेदनशील क्षेत्रों में 329 वन चौकी, 4 जल चौकी, 387 बैरियर और 53 अंतर्राष्ट्रीय बैरियर के माध्यम से सुरक्षा और निगरानी की जाती है। इसके अलावा मैदानी अमले को 12 बोर की 2600 नई पंप एक्शन बन्दूक, 900 वायना कूलर, साढ़े पाँच हजार मोबाइल सिम और वन क्षेत्र वालों को 286 रिवाल्वर उपलब्ध कराए गए हैं, साथ ही विशेष सशस्त्र बल की तीन कंपनी भी तैनात रहती है। राज्य शासन, वन्य-प्राणियों द्वारा पहुँचाने वाली जनहानि और पशु हानि के ऐवज में त्वरित क्षतिपूर्ति उपलब्ध करा रहा है। वहीं वन्य-प्राणियों के स्वास्थ्य की बेहतर देख-रेख की जा रही है। वन्य-प्राणी संरक्षण तथा मानव वन्य-प्राणी द्वन्द्व को कम करने के लिए वन्य-प्राणी संरक्षण अधिनियम-1972 के प्रावधानों के अनुसार बाघों के क्रिटिकल रहवास क्षेत्रों ग्रामों का पुनर्स्थापन के लिए ग्रामों को चिन्हांकित कराकर पुनर्स्थापन प्रावधानित है। यह पुनर्स्थापन संबंधित ग्राम के रहवासियों की सहमति बाद किया जाता है। पंजीकृत वन्य-प्राणी अपराध प्रकरणों की सुनवाई के लिए एस.टी.एस.एफ. द्वारा जबलपुर, इंदौर, होशंगाबाद, सागर और सतना में विशेष न्यायालय स्थापित हैं। प्रदेश को वन्य-प्राणी तस्कर को पकड़ने में उल्लेखनीय सफलता पर इंटरपोल द्वारा सराहना भी की गई है।



पेंच टाइगर रिजर्व में पर्यटन के क्षेत्र में नई पहल

प्रबंधन की दृष्टि से पेंच टाइगर रिजर्व भारत में अग्रणी स्थान पर है। वन एवं वन्यप्राणी प्रबंधन कार्यों को देखते हुए विशेषज्ञ दल द्वारा 100 में से 97 नंबर पेंच टाइगर रिजर्व को दिये गये हैं। इस अवसर पर दिनांक 02.01.2021 को माननीय डॉ. कुँवर विजय शाह वनमंत्री म.प्र. शासन द्वारा भ्रमण किया गया। उन्होंने कहा कि जो श्रमिक वन एवं वन्यप्राणियों की सुरक्षा में लगे हुये उनके सम्मान हेतु **पार्क डे** मनाये जाने की भी योजना है, जो श्रमिक की सेवा 12 वर्ष पूर्ण हो चुकी है उन्हें कुशल श्रमिक का पारिश्रमिक दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त आने वाले समय में श्रमिकों को प्रत्येक 3 वर्षों में नई सायकल तथा प्रत्येक वर्ष जूते, मीजे, गर्म श्वेटर, कैप प्रदान किये जावेंगे तथा उनका स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया जावेगा। टाइगर रिजर्व में कार्यरत जो श्रमिक महावत, चाराकटर का कार्य कर रहे हैं उन्हें उसी पद पर नियमितिकरण किये जाने की कार्यवाही की जा रही है।



मान. वनमंत्री जी द्वारा स्कूली बच्चों के पार्क भ्रमण हेतु सांसद निधि से 20 सीटर 02 मिनी बस मान. विधायक, विधान सभा क्षेत्र बरघाट से 01 एम्बुलेंस प्रदाय बाबत् कहा गया।

पेंच टाइगर रिजर्व के बफर क्षेत्र में पर्यटन की संभावित गतिविधियों जैसे हार्ट एयर बलून आदि को प्रारंभ कर आने वाले समय में स्थानीय ग्रामीणों को गाइड, वाहन चालक आदि के रूप में पर्यटन क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराये जाने की योजना है। टुरिया में स्थित शहीद स्मारक स्थल पर शहीदों के सम्मान में 7 दिवसीय शहीद मेला आगामी समय में लगाये



जाने हेतु अपने वक्तव्य में कहा गया। पार्क में विशेष महत्वपूर्ण व्यक्तियों (VIP) हेतु 10 टिकट आरक्षित रखने तथा उसे 48 घण्टे पूर्व तक किसी अन्य को आबंटित न करने के संबंध में शासन स्तर से आदेश शीघ्र प्रसारित करने के हेतु बताया गया। स्वागत समारोह उपरांत माननीय वनमंत्री महोदय द्वारा गणेश तालाब मचान का शुभारंभ उपरोक्तानुसार सम्माननीय जनप्रतिनिधियों, ग्रामीणों, विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में किया गया।

दिनांक 01.01.2021 को प्रातः माननीय वनमंत्री जी द्वारा अलीकट्टा में हाथियों की पूजा (गणेश पूजन) की गई तथा उन्हें गन्ना, गुड़, फल खिलाया गया। गणेश पूजन उपरांत पार्क का भ्रमण करते हुये वापस किपलिंग कोर्ट रिसोर्ट पहुंचकर लंच पश्चात् वन्यप्राणी प्रबंधन, सुरक्षा व अन्य विषयों के साथ माननीय वनमंत्री, मध्यप्रदेश शासन की अध्यक्षता में अंतर्राज्तीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) महाराष्ट्र डॉ. नितिन काकोडकर,



श्री आलोक कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) मध्यप्रदेश, श्री बी.एस. हूडा, अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (वन्यप्राणी) महाराष्ट्र, डॉ. रवि किरणा, गोवेकर, क्षेत्र संचालक पेंच टाइगर रिजर्व, नागपुर, श्री विक्रमसिंह परिहार, मुख्य वन संरक्षक एवं क्षेत्र संचालक पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी, श्री आर.एस. कोरी, मुख्य वनसंरक्षक, सिवनी वन वृत्त, श्री एस.एस. उद्दे, वन संरक्षक कार्य आयोजना वृत्त सिवनी, श्री पी.पी. टिटारे, वनमण्डलाधिकारी, दक्षिण सिवनी सामान्य



वनमण्डल, श्री अमलेन्दु पाठक उप संचालक, पेंच टाइगर रिजर्व, नागपुर, श्री एम.बी. सिरसैया, उप संचालक पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी, श्री अनुराग कुमार, वनमण्डलाधिकारी सिवनी उत्पादन वनमण्डल, श्री प्रदीप मिश्रा, वनमण्डलाधिकारी उत्तर सिवनी सामान्य वनमण्डल, श्री महेन्द्र सिंह उइके, वनमण्डलाधिकारी नरसिंहपुर, श्री डी.के. वासनिक, संभागीय प्रबंधक बरघाट परियोजना मण्डल सिवनी, श्री किरण पाटिल, सहायक वनसंरक्षक महाराष्ट्र, श्रीमती भारती ठाकरे, स.व.सं. छिन्दवाड़ा क्षेत्र, श्री आशीष पाण्डेय, अधीक्षक पेंच मोगल अभ्यारण्य, सिवनी, श्री बंसत पिछोड़े, सहायक वन संरक्षक सिवनी क्षेत्र एवं पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी तथा नागपुर के परिक्षेत्राधिकारी उपस्थित हुये। कार्यशाला के शुभारंभ के पूर्व माननीय वनमंत्री जी एवं अन्य आमंत्रित वनाधिकारियों का स्वागत पुष्पहार से किया गया। तत्पश्चात् वन्यप्राणी प्रबंधन, सुरक्षा विषयों पर वन्यप्राणी शाखा के महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश के अधिकारियों द्वारा अपने-अपने सुझाव व्यक्त किये गये। श्री आलोक कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) मध्यप्रदेश, श्री आलोक कुमार द्वारा बताया गया कि वन्यप्राणी सुरक्षा एवं पार्क प्रबंधन की दिशा में माननीय वनमंत्री जी जो पहल कर रहे हैं वह गर्व की बात है। यह पहला अवसर है जब माननीय मंत्री जी अंतर्राज्तीय कार्यशाला में उपस्थित हुये हैं। पेंच टाइगर रिजर्व, महाराष्ट्र में जो अच्छे कार्य इस दिशा में किये जा रहे हैं, उन कार्यों को पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी में भी लागू किया जाना चाहिये। सीमा से लगे हुये क्षेत्र के अधिकारी/कर्मचारियों को आपस में संपर्क बनाते हुये अवैध मत्स्याखेट एवं अन्य अवैध गतिविधियों पर संयुक्त कार्यवाही



की जानी चाहिये। डॉ. नितिन काकोडकर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) महाराष्ट्र द्वारा बताया गया कि पिछले 20-25 सालों से तोतलाडोह जलाशय में अवैध मत्स्याखेट की गतिविधि कम हुई हैं। पेंच टाइगर रिजर्व महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश की अधिकारी/कर्मचारी आपसी समन्वय बनाते हुये इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। पर्यटन के क्षेत्र में प्रगति के पक्ष में अच्छी बातों की नकल करने में कोई बुराई नहीं है। वन्यप्राणी प्रबंधन एवं सुरक्षा, पर्यटन के क्षेत्र में पड़ोसी राज्यों में किये जा रहे नवाचार को यहाँ की परिस्थितियों के अनुसार अपनाने हेतु कहा गया। पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी पार्क प्रबंधन कार्यों में पूरे देश में पहले नम्बर पर आने पर बधाई दी गई। वन एवं वन्यप्राणी सुरक्षा कार्यों में सुरक्षा श्रमिकों के सराहनीय योगदान को देखते हुये सभी नेशनल पार्कों में पार्क डे मनाये जाने हेतु निर्देश दिये गये। पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी एवं वन वृत्त सिवनी में अवैध मत्स्याखेट एवं अवैध कटाई की

दिये गये। पर्यटन के क्षेत्र में नई पहल करते हुये बांधव टाइगर रिजर्व में हार्ट एयर बलून की शुरुआत पिछले दिनों में की गई है, उसे पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी में माह जनवरी-फरवरी 2021 में प्रारंभ करने के संबंध में बताया गया। कार्यशाला के समापन उपरांत माननीय वनमंत्री जी द्वारा टिकाड़ी-कुंभपानी नवीन बफर सफारी दिन एवं रात्रि का शुभारंभ पेंच डोडा संगम स्थल पर किया गया जिसमें माननीय अर्जुनसिंह काकोडिया, विधायक बरघाट, पं. श्री रमेश दुबे, पूर्व विधायक चौरई, श्री शैलेन्द्र रघुवंशी, उपाध्यक्ष जिला पंचायत छिन्दवाड़ा, श्रीमती शांता बाई, जनपद सदस्य श्री ज्ञानचंद सनोडिया, भा.ज.पा. उपाध्यक्ष एवं अन्य सम्माननीय जनप्रतिनिधि गण, पत्रकार बंधु, गणमान्य नागरिक एवं विभागीय अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

दिनांक 02.01.2021 को खवासा में कर्मचारी स्वास्थ्य



परीक्षण शिविर तथा माननीय वनमंत्री जी की अध्यक्षता में कर्मचारी कल्याण शिविर आयोजित किया गया जिसमें श्री राजेश श्रीवास्तव, वन बल प्रमुख एवं प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्यप्रदेश, श्री आलोक कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) मध्यप्रदेश, श्री आर.एस. कोरी, मुख्य वन संरक्षक, सिवनी वन वृत्त, श्री विक्रमसिंह परिहार, मुख्य वन संरक्षक एवं क्षेत्र संचालक पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी, श्री एस.एस. उद्दे, वन संरक्षक कार्य आयोजना वृत्त सिवनी, श्री पी.पी. टिटारे, वनमण्डलाधिकारी, दक्षिण

रोकथाम हेतु संयुक्त गश्ती पर बल देने हेतु कहा। पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी में जल बल चौकी कम एम्बुलेंस की व्यवस्था, नाइट विजन कैमरा लगाने पर चर्चा कर निकट भविष्य में इसे लागू किये जाने की बात भी कही गई।

वन तथा वन्यप्राणियों की सुरक्षा के संबंध में सीमा से लगे सभी राज्यों के वनाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुये प्रत्येक चार माह में बैठक आयोजित कर अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने हेतु रणनीति बनाने के निर्देश

सिवनी सामान्य वनमण्डल, श्री एम.बी. सिरसैया, उप संचालक श्री प्रदीप मिश्रा, वनमण्डलाधिकारी उत्तर सिवनी सामान्य वनमण्डल, श्री महेन्द्र सिंह उइके, वनमण्डलाधिकारी नरसिंहपुर, श्री डी.के. वासनिक, संभागीय प्रबंधक बरघाट परियोजना मण्डल सिवनी एवं अन्य वनाधिकारी उपस्थित रहे। सर्वप्रथम उपस्थित सुरक्षा श्रमिक, महावत, चाराकटर एवं क्षेत्रीय अमले का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया तत्पश्चात् माननीय वनमंत्री जी द्वारा कर्मचारी कल्याण शिविर में पहुंचकर दीप प्रज्वलित





कर गणेश पूजन एवं कन्या पूजन किया गया। इस अवसर पर स्थानीय स्कूली छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना का गायन किया गया। सरस्वती वंदना के पश्चात् मंच पर उपस्थित माननीय वनमंत्री जी, श्री राजेश श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश, श्री आलोक कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) मध्यप्रदेश, श्री विक्रमसिंह परिहार, मुख्य वन संरक्षक एवं क्षेत्र संचालक, पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी द्वारा उद्घोषण किया गया। उद्घोषण पश्चात् माननीय वनमंत्री जी द्वारा अपने कर कमलों से सुरक्षा श्रमिकों को जूता, मोजा, स्वेटर, गरम टोपा, वाटर फिल्टर, सोलर लैम्प, साइकिल का वितरण किया गया। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय वनमण्डल के अंतर्गत बांस मिशन के हितग्राहियों को उनके लाभांश की राशि तथा कूकर एवं अन्य सामग्रियों का वितरण किया गया।

इस अवसर माननीय मंत्री जी द्वारा कर्मचारियों की समस्या के निवारण हेतु एक समिति का गठन करने हेतु कहा गया जिसमें सुरक्षा श्रमिक, वन रक्षक, वनपाल, 01 वनक्षेत्रपाल को समिति में सदस्य के रूप में सम्मिलित किये जाने के निर्देश दिये गये। बफर क्षेत्र के ग्रामीणों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की दृष्टि से कौशल उन्नयन अंतर्गत फोकलेन, जे.सी.बी., डम्पर चालन कार्य का प्रशिक्षण दिलाये जाने हेतु कहा गया। कौशल उन्नयन योजना अंतर्गत सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त की हुई युवतियों को रोजगार के अवसर प्रदान किये जाने के उद्देश्य से वन चेतना केन्द्र, खवासा में 25 हजार मूल्य की 10 अत्याधुनिक व्यावसायिक सिलाई मशीन स्थापित किये जाने की घोषणा की गई।



ग्रीन इंडिया मिशन अंतर्गत रोपणी उन्नयन कार्य

सामाजिक वानिकी वन वृत्त भोपाल का भू-दृश्य (Landscape) भोपाल, रायसेन एवं सीहोर जिलों में फैला हुआ है। ग्रीन इंडिया मिशन योजना के अंतर्गत उक्त जिलों में स्थापित रोपणियों में अधोसंरचना विकास एवं रोपणी उन्नयन कार्य वर्ष 2018 से किया जा रहा है। रोपणी उन्नयन कार्य सीहोर जिले की बांसापुर एवं होलीपुरा रोपणी, रायसेन जिले की अमरावद प्रथम रोपणी एवं भोपाल जिले की अहमदपुर रोपणी में किया गया है।

ईको सिस्टम सर्विसेज इम्प्रूवमेंट प्रोजेक्ट (ESIP) परियोजना एवं विश्व बैंक से प्राप्त राशि की सहायता से रोपणी में अधोसंरचना विकास, जल स्रोत विकास, विद्युत व्यवस्था, पौधा तैयारी हेतु आवश्यक उपकरण एवं संरचनाओं आदि का निर्माण किया गया है।



ग्रीन इंडिया मिशन अंतर्गत रोपणियों में मुख्य अधोसंरचना विकास कार्य -

क्र.	अधोसंरचना	विवरण
1	मिस्ट चैम्बर	4 नग
2	पॉली हाउस	3 नग
3	ग्रीन हाउस	1 नग
4	माइक्रोस्पिंकलर	1000 बेड
5	वर्मी कम्पोस्ट यूनिट	64 टैंक



क्र.	अधिसंरचना	विवरण
6	सीमेट कांक्रीट बेड	820 बेड
7	सीड स्टोर	4 नग
8	ओव्हर हेड टैंक	4 नग
9	कस्टमर विजिटर सेंटर	1 नग
10	सीड ट्रीटमेंट प्लेटफार्म	2 नग
11	लेबर हट	3 नग
12	सोलर पैनल	1 नग
13	फेंसिंग	2000 रनिंग मीटर
14	इनर रोड	2500 रनिंग मीटर
15	कोकोपिट शेड	2 नग
16	कम्पोस्ट टैंक	16 नग
17	साइनेज	-
18	सीसीटीवी कैमरा	1 नग
19	सोलर लाइट	8 नग
20	विजिटर सेंटर हेतु फर्नीचर	-
21	मृदा परीक्षण मशीन	4 नग
22	मृदा परीक्षण प्रयोगशाला	1 नग
23	प्रवेश द्वार	1 नग
24	रूट ट्रेनर सेल्स व स्टैंड	1 लाख नग
25	सोलर पम्प सेट	7.5 कि.वा.
26	शौचालय	1 नग
27	पेयजल व्यवस्था	1 नग

उक्त अधिसंरचना विकास एवं रोपणी उन्नयन कार्यो से रोपणियों की उत्पादक क्षमता का विकास हुआ है जिससे रोपणियों में उच्च गुणवत्ता के पौधे तैयार किये जाते हैं। रोपणियों में दुर्लभ एवं संकटापन्न प्रजातियों के पौधों को कृत्रिम तकनीक द्वारा अनुकूल वातावरण में तैयार किया जाता है एवं पौधे वृक्षारोपण क्षेत्रों में प्रदाय किये जाते हैं। रोपणियों में अधिसंरचना विकास एवं रोपणी उन्नयन कार्य के फलस्वरूप सामाजिक वानिकी वृत्त भोपाल के अंतर्गत उक्त रोपणियों को उत्कृष्ट श्रेणी प्रदाय की गई है।

मिस्ट चैम्बर



संख्या - 4 नग

उपयोगिता - नियंत्रित तापमान एवं आर्द्रता में बारीक बीजों जैसे पीपल, बरगद, पाकर आदि से पूरे वर्ष अंकुरण प्राप्त किया जाता है।

मिस्ट चैम्बर



संख्या - 3 नग

उपयोगिता - उच्च तापमान एवं आर्द्रता की स्थिति में कठोर कवच वाले बीजों जैसे बीजा, कुसुम, अचार आदि से पौधे तैयार किये जाते हैं।

ग्रीन हाउस



संख्या - 1

उपयोगिता - पौधों के सुदृढीकरण हेतु नियंत्रित प्रकाश एवं आर्द्रता की स्थिति निर्मित करता है।

माइक्रोस्प्रिंकलर



संख्या - 1000 बेड

उपयोगिता - कृत्रिम रूप से वर्षा ऋतु के सामान वातावरण स्थापित कर नियंत्रित मात्रा में जल सिंचाई करता है।

सीमेंट कांक्रीट बेड



संख्या - 850 बेड

उपयोगिता - मुख्यतः रोपणी में खरपतवार से पौधों को सुरक्षित रखता है। सी.सी. बेड में ब्रेडिंग एवं स्पेसिंग आसानी से की जा सकती है जिसके फलस्वरूप उच्च गुणवत्ता के पौधे तैयार होते हैं।

सीड स्टोर



संख्या - 4 नग

उपयोगिता - बीज भण्डारण कक्ष में स्वच्छ एवं नियंत्रित आर्द्रता में वानिकी प्रजाति के बीजों का भण्डारण दीर्घ अवधि तक किया जाता है।

सीड ट्रीटमेंट प्लेटफार्म



संख्या - 2 नग

उपयोगिता - मुख्यतः कठोर कवच वाले बीज जैसे सागौन के उपचारण हेतु आवश्यक है।

वर्मी कम्पोस्ट यूनिट



संख्या - 64 टैंक

उपयोगिता - रोपणियों में पौधा तैयारी एवं वृक्षारोपण हेतु उच्च गुणवत्ता के जैविक खाद का निर्माण किया जाता है।

ओव्हरहेड टैंक



संख्या - 4 नग

उपयोगिता - मुख्यतः जल भण्डारण कर गुरुत्वाकर्षण बल की सहायता से सिंचाई कार्य किया जाता है।



करटमर विजिटर सेंटर



संख्या - 1 नग

उपयोगिता - रोपणी में आगंतुक एवं क्रेताओं को मूलभूत सुविधाएं जैसे पेयजल, बैठक व्यवस्था आदि उपलब्ध कराता है।

कोकोपिट यूनिट



संख्या - 2 नग

उपयोगिता - कोकोपिट यूनिट में मुख्यतः नारियल के जर्तों एवं रेशों से कोकोपिट निर्माण किया जाता है जो पौधों की वृद्धि एवं जड़ प्रणाली विकसित करने में सहायक होता है।

आंतरिक मार्ग



संख्या - 2500 रनिंग मीटर

उपयोगिता - रोपणी में वर्षा ऋतु के दौरान पौधा परिवहन आसान बनाता है। रोपणी निरीक्षण व जल निकासी सुनिश्चित करता है।

मृदा परीक्षण प्रयोगशाला



संख्या - 1

उपयोगिता - मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में मृदा परीक्षक मशीन द्वारा मृदा में पोषक तत्वों की उपलब्धता का पता लगाया जाता है।

सोलर पैनल



संख्या - 1 **उपयोगिता** - सौर ऊर्जा, दूरस्थ रोपणियों में विद्युत का वैकल्पिक एवं अतिरिक्त साधन है।

फेंसिंग



संख्या - 2000 रनिंग मीटर
उपयोगिता - रोपणी क्षेत्र को मवेशियों एवं चराई से प्रतिबंधित करता है।

लेबर हट



संख्या - 3 नग
उपयोगिता - बाहरी श्रमिकों की आवास व्यवस्था सुनिश्चित करता है।



चम्बल घड़ियालों को कूनो में मिला नया घर

लुसप्राय घड़ियाल प्रजाति ने चम्बल नदी की सहायक नदी कूनो में अपना नया घर बनाया है। लगभग 01 वर्ष पूर्व एक मादा घड़ियाल ने चंबल नदी से कूनो नदी तक लगभग 30-35 किमी दूर कूनो नदी को अपना घर बनाया था। प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) मध्यप्रदेश भोपाल से प्राप्त स्वीकृति अनुसार श्योपुर जिले के अंतर्गत आने वाले कूनो राष्ट्रीय उद्यान में श्री बी.एस. अन्नीगेरी, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक ग्वालियर वृत्त ग्वालियर एवं श्री प्रकाश कुमार वर्मा, वनमण्डलाधिकारी कूनो वन्यप्राणी वनमंडल श्योपुर एवं अन्य स्टॉफ की उपस्थिति में दि. 22.12.2020 को कूनो नदी में 25 घड़ियाल विमोचित किए गए जिनमें 05 नर व 20 मादा घड़ियाल शामिल थे। ये घड़ियाल मुरैना जिले के देवरी घड़ियाल प्रजनन केन्द्र में वर्ष 2018 से पाले जा रहे थे। दि. 22.12.2020 को ही कूनो नदी में पालपुर विश्राम गृह के समीप 09 बतागुर कछुआ, 09 कछुआ डोंगोका एवं 07 नग लेसीमस पेंटाटा कछुओं को भी नदी में विमोचित किया गया। विमोचित किए गए घड़ियालों को कूनो नदी में किले के सामने बांस-चटाई का एन्व्लोजर बनाकर उसमें छोड़ा गया तथा 04 नर एवं 02 मादा घड़ियालों को रेडियोटेगिंग किया गया। इसके पश्चात दिनांक 07.02.2021 को भी 25 घड़ियाल कूनो नदी में मुक्त किए गए जिनमें भी 5 नर व 20 मादा घड़ियाल शामिल थे। कूनो नदी में छोड़े गये घड़ियालों की लंबाई 120 सेमी



से 150 सेमी के बीच है। इस प्रकार कूनों राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत कूनों नदी में देवरी घड़ियाल प्रजनन केन्द्र से छोड़े गये घड़ियालों की कुल संख्या 50 हो गई है जिनमें 10 नर तथा 40 मादा घड़ियाल हैं।



मुरैना में राष्ट्रीय चंबल अभ्यारण्य में घड़ियालों की प्रजाति की लगातार हो रही वृद्धि के कारण घड़ियालों द्वारा चंबल नदी की सहायक नदियों की ओर भी रुख किया गया है। इस कारण वन विभाग द्वारा घड़ियालों को कूनों नदी में लाने का फैसला लिया गया। वर्ष 2017 में रेडियोटेग किए गए घड़ियालों में से 01 मादा घड़ियाल विगत वर्ष चंबल नदी की अपस्ट्रीम में लगभग 40 किमी का सफर तय कर कूनों नदी के रेतीले घाट पर अण्डे देने के लिए पहुंची थी।

Madras Crocodile Bank Trust and Centre for Herpetology (MCBTCH) के वैज्ञानिक श्री जैलबदीन शेख जो कि घड़ियाल के व्यवहार पर अध्ययन कर रहे हैं, के द्वारा घड़ियाल के कूनों नदी तक आने की जानकारी वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को दी गई। पिछले साल घड़ियाल प्रवास का यह पहला मामला था जिसके पश्चात यह अनुभव किया गया कि अब ये सरीसृप भी चंबल नदी के आसपास अपने निवास स्थान से संख्या बढ़ने के कारण अन्य सहायक नदियों को भी अपना घर बना रहे हैं। 05 मादा घड़ियाल के साथ ही अन्य घड़ियाल भी बाद में कूनों नदी में पहुंच गए।

पूर्व में एक समय था जब सरीसृप प्रजातियां पाकिस्तान से म्यांमार तक विस्तृत क्षेत्र में पाये जाते थे परंतु वर्तमान में ये प्रजातियां केवल भारत और नेपाल 02 देशों में ही सीमित हो गई हैं। ये प्रजातियां म.प्र., उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में चंबल नदी अंतर्गत तथा प्रदेश के सीधी जिले की सोन नदी तथा नेपाल की नारायणी नदी में ही पाई जाती हैं। नर घड़ियालों की थूंथन पर एक घड़े जैसी आकृति उभरी हुई होने के कारण इस प्रजाति का नाम घड़ियाल पड़ा। घड़ियाल अपने घड़े का उपयोग मैथुन क्रिया के लिए आवाज करने एवं बुलबुले निकालने के लिए करते हैं। घड़ियाल केवल मछलियों को खाते हैं तथा मगरमच्छ की तरह किसी पर हमला नहीं करते हैं। घड़ियाल मैथुन क्रिया के लिए एकत्र होते हैं तथा मादा घड़ियाल ग्रीष्म ऋतु में नदी में कम बहाव वाले स्थानों पर रेत में अण्डे देती हैं।

कूनों राष्ट्रीय उद्यान में घड़ियालों के रहवास के लिए उपयुक्त स्थान ज्ञात करने के लिए एक विस्तृत सर्वे भी कराया गया जिसके आधार पर घड़ियालों के रहवास स्थलों का चयन किया गया है जो नक्शे पर अंकित हैं। कूनों नदी में विमोचित किए गए घड़ियालों की गतिविधियों की प्रतिदिन निगरानी कूनों नदी के पालपुर एवं पैरा घाट पर की जा रही है। ये घड़ियाल कूनों में सैलानियों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं।



भोपाल के संजीवनी और लघु वन उपज द्वारा तैयार की गई हर्बल गुलाल

वन विभाग ने शहरवासियों को ईको फ्रेंडली रंग उपलब्ध कराने की तैयारी पूरी कर ली है। विभाग की लघु वनोपज प्रसंस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र बरखेड़ा पठानी में इन रंगों को तैयार किया गया है।

प्राकृतिक रूप से तैयार हो रही गुलाल में बेलपत्र, पालक, हल्दी, चुकंदर, और पलाश, सिंदूरी जैसी सामग्री का उपयोग किया गया है। इसकी खास बात तो यह है कि रंग अगर मुंह में चला भी जाए तो नुकसान करने की बजाय लाभ ही करेगा, क्योंकि इसमें जितनी भी सामग्री का प्रयोग किया गया है वह आयुर्वेद के मुताबिक है। गुलाल का बेस अरारोट से तैयार किया गया है। कोरोना संक्रमण को देखते हुए सह गुलाल भोपाल में ही मिलेगा।

पीले रंग की गुलाल - हल्दी, हरे रंग की गुलाल- बेलपत्री और पालक, लाल रंग की गुलाल - पलाश, सिंदूरी और चुकंदर।

तीन रंगों की गुलाल- विंध्य हर्बल के संजीवनी केन्द्र में कोरोना के कारण होली के लिये केवल 4 किंटल ही इको फ्रेंडली गुलाल तैयार किया गया है। इसके पूर्व सात रंगों में 10 किंटल गुलाल तैयार किया जाता था।

वर्तमान समय में जहाँ कृत्रिम रंग एवं गुलाल से जन सामान्य को त्वचा, केश और आँख संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसके विपरित प्राकृतिक रूप से तैयार किया गुलाल त्वचा और केश के लिये लाभदायक है, अपितु कोरोना काल में जन सामान्य को विशेष तौर पर महिलाओं को रोजगार का अवसर प्रदान करता है।



राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य

राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य वर्ष 1978-79 में स्थापित किया गया। यह देश का सबसे बड़ा संरक्षित क्षेत्र है, इसका पानी अत्यधिक स्वच्छ एवं प्रदूषण रहित है। अभ्यारण्य मध्यप्रदेश में 435 कि.मी. क्षेत्र में फैला हुआ है यह श्योपुर, मुरैना, भिण्ड 3 जिलों के अंतर्गत आता है। राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य का उद्देश्य लुप्तप्राय जलीय जीवों जैसे घड़ियाल, मगर, डाल्फिन, कछुआ व जलीय पक्षियों का संरक्षण करना है इसमें मुख्यतः घड़ियाल का संरक्षण है। राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य में लगभग 180 प्रजाति के पक्षी पाये जाते हैं जिनमें प्रवासी व अप्रवासी पक्षी सम्मिलित हैं।



देवरी घड़ियाल प्रजनन केन्द्र :- घड़ियाल पुनर्वास केन्द्र देवरी पर वर्ष 1981 से प्रति वर्ष राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य से 200 अण्डों को संग्रहण कर केन्द्र देवरी पर बनी हैचरी में कृतिम तकनीकी तरीके से हैच करा कर बने पानी के कुण्डों में कुशलतापूर्वक लगभग ढाई से तीन साल तक पाला जाता है, शावकों के 120 से.मी. लम्बाई होने के उपरान्त राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य एवं देश के अन्य नदियों से भाग अनुसार विमोचन/प्रदाय किये जाते हैं।

माननीय वनमंत्री मध्यप्रदेश शासन डॉ. कुँवर विजय शाह का घड़ियाल केन्द्र देवरी दौरा

मध्यप्रदेश सरकार के वनमंत्री जी ने घड़ियाल केन्द्र देवरी का दौरा किया केन्द्र पर चलाए जा रहे ग्री एण्ड रिलीज प्रोग्राम के तहत किये जाने वाले कार्यों की जानकारी ली। जैसे घड़ियाल के अण्डे को रखना, उनकी देख रेख करना, पालन पोषण में आने वाली कठिनाईयों को जाना एवं कार्यों के प्रति मंत्री जी ने संतुष्टि जाहिर की, उन्होंने वर्ष दर वर्ष घड़ियाल की संख्या में वृद्धि को लेकर अधिकारी, कर्मचारियों की सराहना की।



माननीय वनमंत्री मध्यप्रदेश शासन डॉ. कुँवर विजय शाह का अभ्यारण्य दौरा

दिनांक 05.02.2021 को विमोचन योग्य 2018 बैच के 05 नर, 15 मादा कुल 20 घड़ियाल शावकों को राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य में चम्बल नदी के राजघाट पर मंत्री जी के कर कमलों द्वारा घड़ियाल शावकों को स्वछंद विचरण हेतु उनके प्राकृतिक आवास में विमोचन कार्यक्रम किया गया।

मंत्री जी द्वारा चम्बल बोट सफारी का लुत्फ उठाया गया, सफारी के दौरान घड़ियाल, मगर व विभिन्न प्रकार के पक्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त की, कहा कि यह देश का एकमात्र अभ्यारण्य है जहां घड़ियाल का संरक्षण कर रिलीज किया जाता है जो म.प्र. शासन के लिये बड़े गौरव की बात है।



“Sustaining Tiger Population and Managing Human-Animal Interaction”

Future Challenges in Panna Tiger Reserve, MP

(by Uttam Kumar Sharma, Field Director and Jarande Ishwar R, Deputy Director, Panna TR)



1) Introduction

Increasing population of tigers in Panna Tiger Reserve (PTR) will throw management challenges in future which need to be anticipated and dealt with proper prior planning. As analysed in previous article (“A brief note on Tiger population dynamics and its future projection in Panna Tiger Reserve”) that if 33 cubs are added every two years, these new recruits can be absorbed in the current tiger population by replacing the area occupied by the old individuals, re-adjusting the territories and spread in to buffer areas.

- The shift in the territory of old tigers from core area towards periphery indicates that young generation of tigers is pushing older generation to the periphery and themselves occupying central stage. It is discussed in detail in para 2 ‘Replacement and Re-adjusting of territories of tiger’.
- For sustaining this increase in population, one also has to keep an eye on sex ratio and distribution of male/female tigers in PTR to assess population stress, if any. It is discussed in para 3 ‘Assessment of Population Stress’ in detail.
- The tiger population dynamics predicts exponential growth in the Tiger population in next 3-5 years. Considering such a growth it is imperative to study the prey base supporting this population and the future dynamics of the same so that necessary strategy can be drawn to attain the required prey density. At the same time to sustain such a healthy number of tigers the other ecological factors like availability of water etc needs to be assessed. Readjusting the territories requires increase in prey density in the currently occupied core area. Similarly, tiger spread into buffer areas also require improvement in the ecology of buffer areas. It is discussed in para 4 ‘Prey Dynamics in PTR’ in detail.

2) Replacement and Re-adjusting of territories of tiger

PTR is collecting radio collared data (movement data) of all the translocated tigers and also few Panna progeny. This historical movement data

provides valuable information not only regarding territory of different tigers but also shift in territory over a period of time (Territory of a tiger here has been taken as an area where its movement has happened over a year or more). Here, analysis has been done for three translocated tigers namely T1 (female), T3 (male) and T7 (male). T1 and T3 were introduced in PTR in year 2009, T7 was introduced in year 2014 and one Panna progeny namely P142 (female).

Following charts have been prepared with the movement data collected for the following periods for analysed tiger :

- i) Chart 1- Tiger T1 (female): from 2009 to 2019
- ii) Chart 2- Tiger T3 (male): from 2009 to 2019
- iii) Chart 3- Tiger T7 (male): from 2015 to 2019



Chart 1- T 1 territory distribution

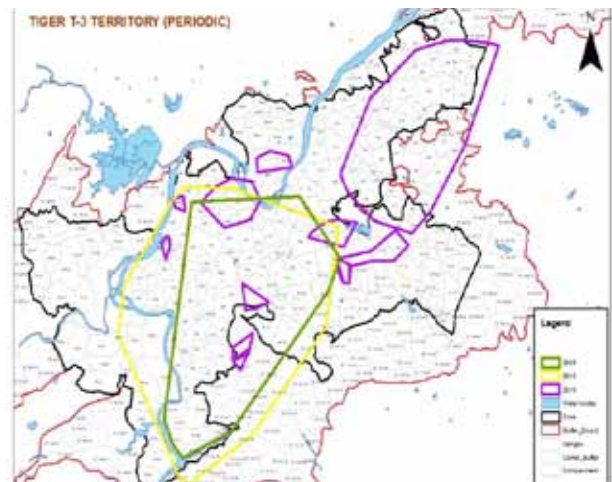


Chart 2- T 3 territory distribution



Chart 3- T 7 territory distribution



Chart 4- P142 territory distribution



iv) Chart 4- Tiger P142 (female) : from 2015 to 2019

Following results can be drawn conclusively from the above charts:

- i) There is shift in territory of all 3 translocated tigers from their introduction year to the present.
- ii) This shift in territory is from Core area of the reserve to peripheral areas.
- iii) Shift in territory has happened for both male and female translocated tigers.
- iv) Size of the territory has shrunk from introduction year to the present.
- v) Panna progeny being younger are occupying the Core area.

Analysis of the result obtained as above gives value information regarding behaviour of tiger but more importantly about successful management of tiger population within the park since tiger reintroduction. Following points emerge from the analysis :

(1) Shift in territory to periphery for these tigers indicates that core area is increasingly being occupied by younger tigers. It also matches with the field reality where young tigers have been regularly captured in camera traps in core areas. Establishment of young tiger population inside core area of the Reserve is a sign of healthy growth of population of tigers in the PTR.

(2) Shrinking territory of all 3 translocated tigers indicates increasing number of tigers in the Reserve which is forcing each tiger to reduce its territory. As at the time of reintroduction of tigers in 2009, these translocated tiger (three namely T1, T2 & T3 translocated in 2009, two namely T4 & T5 translocated in 2011, T6 in 2014 and T7 translocated in 2015) were the only tiger population in the Reserve having whole core area of 576 sq km at their disposal, these translocated tigers maintained large territories. As tiger numbers are rising in the Reserve, all charts show shrinkage in territories. This process of shrinking territory is still going on and has not

settled yet. Historical data of Panna National Park show that in past, tiger population in the Park seemed to have remained relatively stable between 20-30 tigers since its inception although the highest count recorded was 36 tigers including young ones in the year 1985. Year 2006 estimate by Wildlife Institute of India had estimated the population at 15-32 tigers in the entire Panna landscape comprising approximately 1000 sq km before it became zero in 2009. Taking the maximum population size of 36 (including young ones) in the past, in approximately 550 sq km forest area, the maximum density ever in PTR comes out to be around 6 tigers per 100 sq km. Currently the density is around 10 tigers per sq km. The current density has already breached the historical density figures and it seems it is still evolving in PTR. Hence actual size of the territory will be known only in future and it requires constant gathering and analysing the collected data.

(3) As per the data depicted in chart 1, 2 and 3, shift of older animals is happening towards/ into buffer area, which require attention of Reserve manager. Field data show that along with old tigers, due to increase in population of tigers, young tigers are also moving/ dispersing into buffer area. This will lead to



Chart 5- Distribution of Male tigers



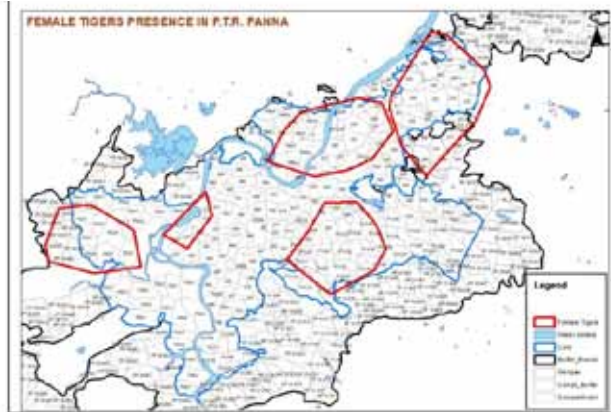


Chart 6- Distribution of Female tigers

more human tiger interaction and put habitat management in buffer area in to focus.

3) Assessment of Population Stress

The issue of stress in tiger population due to adverse sex ratio needs attention. It is not only sex ratio (a ratio of number of female to number of male tiger) which is important, distribution of male and female tiger in the area is equally important. Population stress due to improper distribution of male and female tigers was considered as one of the reasons for local extinction of tigers from PTR. The current distribution of male/female tiger in PTR has been assessed based on data collected by Reserve authorities by Continuous Camera Trap method and monitoring of collared tigers. The data for year 2019 for few tigers show the distribution of male / female tigers in PTR represented in above Charts show that the distribution of male and female tiger in PTR is fairly wide spread and does not give any indication of any population stress. The situation needs to be assessed



Chart 7- Distribution(overlap) of Female and Male tigers

continuously every six months and any stress visible must be tackled.

4) Prey dynamics in Panna

While the territory of male tigers is determined by the number of female tiger's range it can hold, the territory of female tiger is primarily determined by the abundance of the prey and other habitat factors like availability of water sources. A female tiger kills about 40-45 ungulates prey per year consuming about 2000 kg of meat or 3000 kg of live prey, while a male tiger kills higher number of prey, about 50 ungulates a year, consuming 4000 kg a year. A tigress raising three cubs will consume about 65-70 prey animals in a year. Thus roughly, a tiger needs about 50 ungulates or 3000 kg of live prey annually. Tigers may crop roughly 10-15 percent of available prey in the area depending upon how much additional prey is consumed by co-predators like leopard and other carnivores. As PTR is having good leopard population, taking the lower limit of cropping rate at 10 percent for supporting a tiger, it would require minimum 500 ungulates in the area. Considering the latest estimate of 42 tigers (adult + sub-adults) as per January 2020 data, there should be 21000 ungulates in the Reserve, which translates to 36.46 ungulates per sq. km taking in to consideration only the core area of the Reserve. Currently prey density in PTR is around 40 ungulates per sq km which is sufficient for current level of tiger population. As the tiger population in PTR is increasing with high pace considering the favorable sex ratio and other age factors of female tigers, as discussed in earlier note, it is projected that the tiger population will be around 100 including cubs by year 2024. To support this population, there has to be increase in the prey population. The PTR management need to concentrate on increasing the population of the prey like Sambar, Chital and wild Boar, which are the major prey for tigers in PTR.

Comparative analysis of the available prey vis a vis ideal density required (assuming 10 percent cropping rate for tiger population in PTR) is shown in the chart 8.

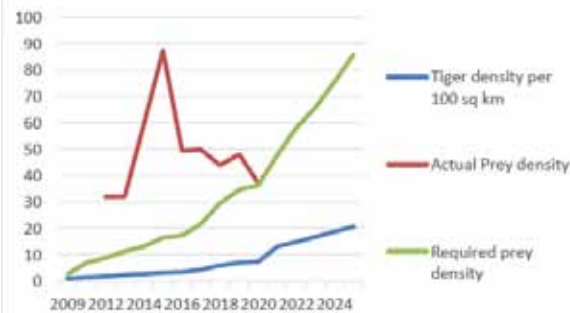


Chart 8- Comparative analysis of projected tiger densities and prey base required

It is evident that present prey density is equal to the required prey density. In future, gap between required prey density and available prey density (at current level) will be increasing as there will be increase in tiger density in PTR.

The comparative analysis of the tiger density per 100 sq km versus prey density per sq km for various tiger reserves in India from all India tiger estimation 2018 is shown in the Chart 9. The position of the PTR shows that the prey density to tiger density ratio is lower than the mean of the all other tiger reserves in India.

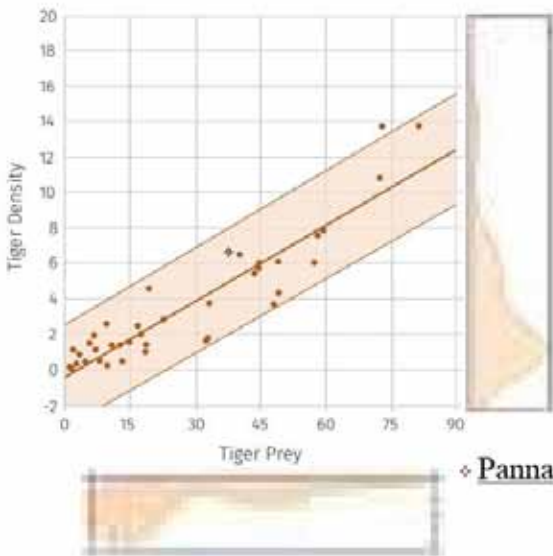


Chart 9 : Comparative tiger and prey densities of other Tiger Reserves and PTR according to 2018 all India tiger estimation

Comparative analysis in Chart 8 of increase in the tiger density and projected prey density vis a vis ideal density required (assuming 10 percent cropping rate) clearly shows current prey density is inadequate to support the projected population density of tiger. With the current prey density at around 40 per sq km, prey population in the core area is approximately 23000. In addition to prey population in the core area, cattle at the fringe also serve as prey for tiger.

The trend in the cattle kill also indicate that with increase in the population of tiger, the number of cattle kill have increased since 2009 and stabilized at around 300 cattle killed per year for last 5 years (Chart 10). Proportion of cattle kill is a sizable prey for the tigers in Panna.

If we do the range wise analysis of the cattle

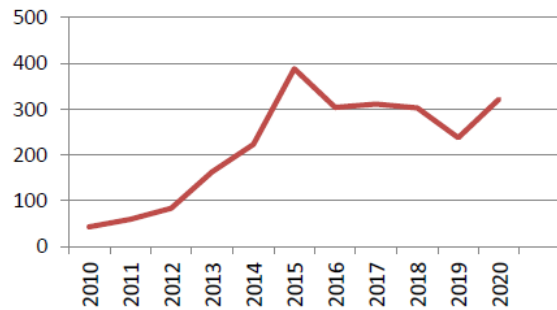


Chart 10- Number of cattle kills per year in Panna

kill data it is evident that some of the buffer areas adjoining Panna Core range accounts for almost 70-80 percent of cattle kill indicating stress in the population and dependence on the cattle for prey. Cattle kill data of Range Amanganj Buffer shown in Chart 11 clearly indicates the occupation of the area by the tiger without having a sufficient prey base is leading to high number of cattle kills.

5) Strategy to support the increasing the tiger population

For a tiger population of 100 including cubs (80 adult + subadult), the requirement of prey population will be 40000. Availability of prey including cattle at present is 26000 (23000+3000 cattle). The deficit can be augmented in two ways: one, by increasing the density of the prey



per sq km from the current level of 38 per sq km. Increasing it to the past highest of 45 per sq km will increase prey population by around 4000. That will still leave the deficit of 10000 prey. The other way forward is to take up the suitable areas in Buffer which are having low prey density and developing these suitably to support the prey population. To fulfil the deficit of around 10000 prey, Buffer area of 300-400 sq km with a low prey density of 25-30 per sq km will be needed. As PTR is having 1021 sq km of Buffer area, areas suitable for tiger can be identified by analyzing the camera trap data of phase IV monitoring and continuous camera trap data.

Some of these areas includes Akola buffer area, most of the area of Amanganj buffer range, area of Kishangarh buffer range adjoining to the Kishangarh Core and Chandranagar core range. Some of these areas are regularly frequented by tigers. The area of Gangau sanctuary adjoining to Manur circle of Mandla range and Panna buffer range area of Chapar and Ghurrau also hold good potential for tiger population to spread in near future. These areas have varying prey density (excluding cattle) of about 22-30 per sq km (2019-20 Phase IV monitoring) which is low compare to prey density in Core. Cattle also form sizable prey for tiger in Buffer and peripheral areas. Cattle kills may also increase in intermediate period in as increasing tiger population in fringe areas of Buffer will have more interaction with human-cattle surroundings.

The prey base in these areas (core as well as buffer area) can be augmented by grassland improvement/development along with habitat improvement for two important prey species namely Chital and Sambhar, development of water holes etc. Improving /developing habitats is a continuous process and both short term and long term strategies must be applied. At the same time as a short term strategy, the grazing pressure of the cattle in the surrounding areas can be reduced by dialogue with local communities and development of ecotourism facilities in these areas. In the long term the money generated by ecotourism facilities would

compensate the communities for losing their grazing rights.

A. Grassland improvement/development

The grasslands developed at the sites of the relocated villages in core area are affected by the weeds and tall grasses. PTR does not have population of any mega herbivore like gaur or wild buffalo. This is leading to increasing area of tall grasses like Themada, Sacharum, *Vetiveria* and *Sorghum spp* etc. Once these grasses grow tall, Chitals avoid these grasslands and shifts to either woodland or places where there is short grasses like *Cynodon dactylon*, lumpha etc. The invasive weeds like *Sida acuta*, *Sida cordifolia*, *Tephrosia purpurea*, Van Tulsi, *Parthenium spp*, *Cassia tora* etc. are another menace in these grasslands. Manual removal of *Sida spp* and *Parthenium spp* can be taken up while Van Tulsi needs to be controlled by cool season burning and broadcasting the seeds of palatable grass species before monsoon.

Also the grasslands need to be demarcated and maintained to avoid the advancement of the tree-land. The grasslands which are being invaded by new regeneration of Teak, *Ziziphus mauritiana* etc. needs to be saved by uprooting it. Some moist areas are seen with advancement of *Phoenix acaulis* which also needs to be uprooted. The grasslands can be demarcated by digging the trench which will trap the flow of tree seeds along the rainwater.

B. Habitat improvement for Chital

If we maintain these grasslands as low laying grasslands of species like dicanthium, *Cynodon dactylon* and lumpha, the population of Chitals will thrive. Also there may be a need for translocation of Chitals from the high productive areas like Pipartola, Surajpura, Raipura - Chanari to higher grasslands like Bhadar, Badgadi. The area around Geharighat has a patch of grassland in Kishangarh core range area where population of Chitals is negligible, this area can be also be populated by introducing the founder population of Chitals. Other ungulates whose population are very low in PTR like chinkaras and chausinga, also require grassland with short grasses.



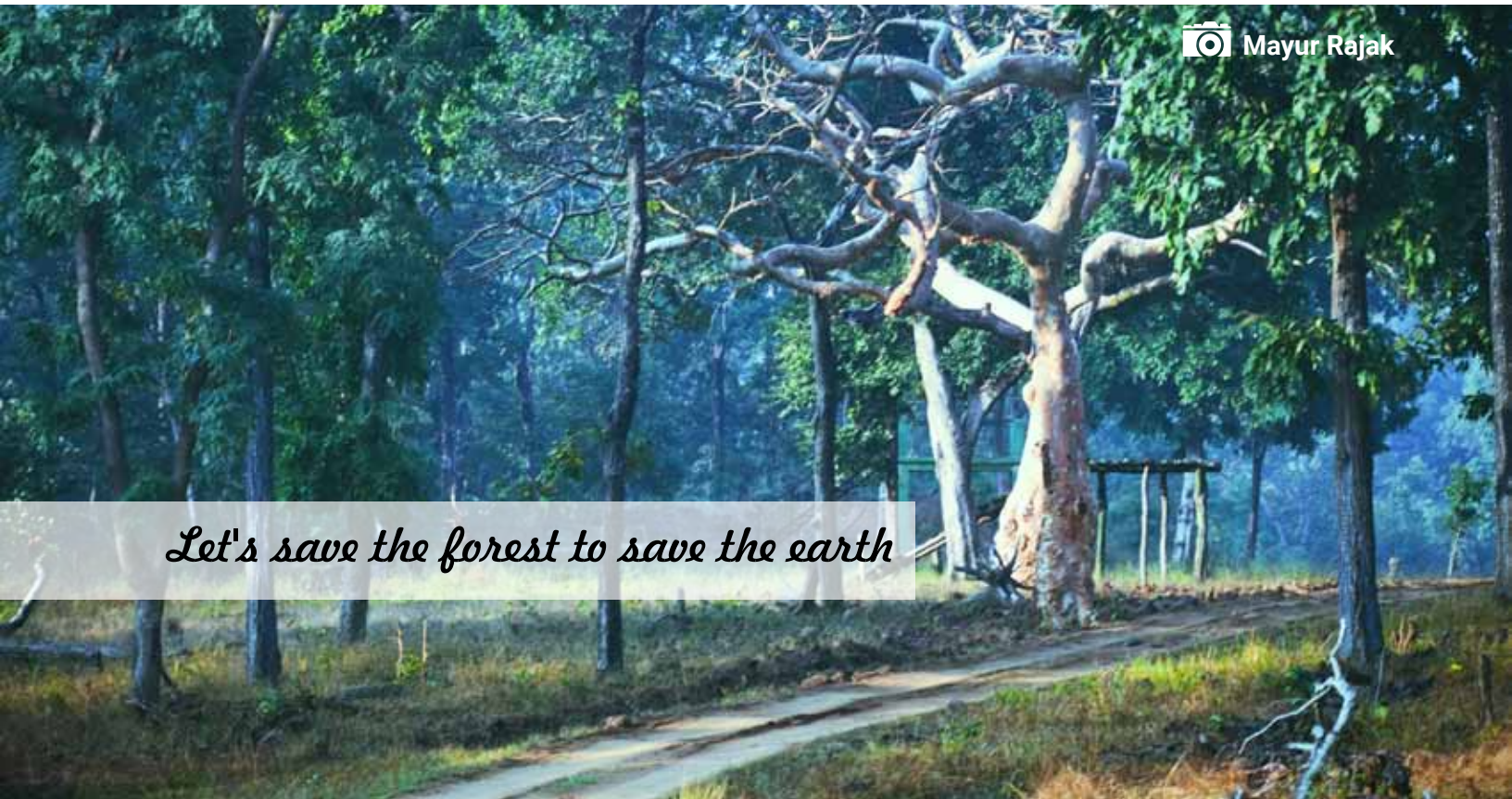
Apart from this, PTR has advantage of Ken river flowing through the Reserve and most of the grasslands are located along the river. These grasslands can be irrigated by using the solar pumps and sprinklers providing the green pasture in the hot summer season.

C. Habitat improvement for Sambar

Panna is said to be a sambar land because of its topography of undulating hills and cliffs at the edge of the three plateaus which runs through it. The edges of the plateau are marked by the heaps of till which are very productive and boasted with heavy vegetation. Sambars mostly occupy these areas where there is abundance of undergrowth of *Helecterus isora*, *Zizhiphus abyssinica* and native bamboo sp. These areas have a limited scope of intervention but the weeds like *Sida codifolia* is spreading and have started invading these areas and needs to be addressed on priority basis. Sambars also do grazing along with browsing but foothills of these cliffs are invaded by lantana. Even though lantana provide a good cover for tigers to facilitate grazing for the Sambars, lantana may be removed in patches at the edges of foothills as well as cliffs for allowing growth of grasses in this area. Removal of the lantana can also lead to increased browsing shrubs like *Helecterus isora*, *Zizhiphus abyssinica* etc.

6) Conclusion

The increasing tiger population of PTR throws a management challenge and a historical opportunity for Reserve authorities. Never before PTR had so many tigers which are currently present in the Reserve. Increasing in tiger population taking its own course in a very healthy manner without any visible stress on tiger population. Tiger population will stabilize in natural course after reaching its peak. The gradient in prey density from around 40-45 per sq km in Core to around 25-30 per sq km in Buffer to nearly zero in areas outside the Reserve need to be maintained and stabilized. This prey density gradient will stabilize the tiger population without coming into any conflict with villagers. At present, by improving habitats in both core and buffer areas with maintaining gradient in prey density, this increase in population can be absorbed without coming in conflict with surrounding villagers. In the intermediate period, Cattle kills may increase and safety of human life will be paramount which will put pressure on sensitive relation between villagers and Forest department. To tackle this challenge, eco-tourism must be promoted in Buffer areas to compensate for livelihood and other losses of villagers.



वन ग्राम “चबूतरा” के
ग्रामवासियों से
डॉ. कुँवर विजय शाह
जी माननीय वनमंत्री,
मध्यप्रदेश ने की चर्चा

डॉ. कुँवर विजय शाह जी माननीय वनमंत्री, मध्यप्रदेश शासन, व अध्यक्ष, म.प्र. राज्य वन विकास निगम ने वन ग्राम “चबूतरा” का निरीक्षण करने के बाद, ग्रामवासियों से चर्चा कर उनकी समस्याएं सुनीं। उन्होंने यह पाया कि इस गांव में प्राथमिक जरूरतों को पूरा किया जाना बहुत जरूरी है।



डॉ. कुँवर विजय शाह जी माननीय वनमंत्री, मध्यप्रदेश शासन, ने खंडवा परियोजना मंडल, खंडवा म.प्र. राज्य वन विकास निगम के अंतर्गत आने वाले वनग्राम “चबूतरा” के विकास व ग्रामवासियों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री - सोलर स्ट्रीट लाईट व सोलर आटा चक्की लगवाने, शुद्ध पेयजल व्यवस्था, गांव के कच्चे घरों में क्रांकीट तथा फर्शी लगाकर पक्का करने, शासकीय विद्यालय में कम्प्यूटर और फर्नीचर प्रदाय करने के साथ ही ग्रामीणों को आवागमन हेतु साइकिल तथा सामूहिक कार्यक्रमों के लिए बर्तन प्रदाय का कार्य, वन विकास निगम के निगमित सामाजिक दायित्व कार्य (सी.एस.आर.) मद के अंतर्गत करने के लिए निर्देशित किया।



डॉ. कुँवर विजय शाह जी, माननीय वनमंत्री, मध्यप्रदेश शासन एवं अध्यक्ष म.प्र. राज्य वन विकास निगम, वनग्राम चबूतरा के ग्रामवासियों से समस्याएं सुनते हुए। साथ ही श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रबंध संचालक वन विकास निगम एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण (20 फरवरी, 2021)

**प्रकृति का न करे हरण,
आओ बचाए पर्यावरण।**



गणतंत्र दिवस पर
प्रधान मुख्य वन संरक्षक
एवं वन बल प्रमुख
श्री राजेश श्रीवास्तव
द्वारा वन विभाग
के अधिकारियों एवं
कर्मचारियों को उत्कृष्ट
कार्य के लिये पुरस्कृत
किया गया।







वन एवं वन्य प्राणियों की सुरक्षा में वन विभाग की सफलतापूर्वक कार्रवाई

भोपाल-रायसेन में फारेस्ट टीम भोपाल को
मिली बड़ी कामयाबी

वन अमले ने चार शिकारी, एक खाल, एक टेलिस्कोपिक 30 बोर राइफल, सात कारतूस, 5 किलो मांस, एक बाइक जप्त किये। भोपाल सीसीएफ के निर्देशन में भोपाल उड़नदस्ता टीम ने रोजड़ा और चीतल का शिकार करके भागे एक दर्जन शिकारियों में से चार शिकारियों को गिरतार करने में सफलता हासिल की है। फारेस्ट टीम ने शिकारियों के पास से 30 बोर की टेलिस्कोप लगी एक राइफल, 30 बोर के दो जिंदा कारतूस, बारह बोर बन्दूक के 5 जिंदा कारतूस, रोजड़ा और चीतल का करीब 5 किलो मांस, एक बाइक और तीन मोबाइल जप्त किये हैं। फिलहाल उड़नदस्ता टीम अन्य फरार आरोपी शिकारियों की तलाश कर रही है।



उड़नदस्ता प्रभारी आरके चतुर्वेदी के अनुसार सीसीएफ और डीएफओ भोपाल को समरधा और उससे लगे रायसेन के जंगलों में लगातार शिकार की सूचनाएं प्राप्त हो रही थी। शिकार रोकने के लिए वन अधिकारियों ने विशेष निर्देश दे रखे थे। आरके चतुर्वेदी के मुताबिक उन्होंने डीएफओ और एसडीओ भोपाल से आदेश प्राप्त कर उड़नदस्ता टीम और सूखी सेवनिया टीम के साथ पूरे इलाके की घेराबंदी शुरू कर दी। चूंकि पहाड़ी ऊंची और पथरीली थी इस कारण पूरा इलाका कवर नहीं हो सका। इस दौरान जंगल में लाइट चमकने के साथ ही 3-4 फायर होने की भी आवाजें गूंजती सुनाई देती रहीं और गुरुवार अल-सुबह शिकारी जंगल से फरार हो गए। गुरुवार पूरे दिन पड़ताल और मुखबिरों से संपर्क करने के बाद गुरुवार रात 9 बजे मुखबिरों ने शिकारियों और उनके ठिकानों और घटनास्थल की जानकारी दी।





श्री आरके चतुर्वेदी ने बताया कि आरोपी शिकारी, रायसेन के मुश्काबाद, हिनोतिया, बासिया, गीदगढ़, भोपाल और विदिशा रोड के हैं। जिनमें से गुरुवार रात साढ़े 10 बजे मुश्काबाद स्थित दो मकानों पर छापा मारकर आरोपी जावेद खां, तौफीक खां, जुबैर खां और हिनोतिया के जितेंद्र को गिरफ्तार किया है। इस दौरान अन्य आरोपी अपने ठिकानों से भागने में कामयाब हो गए हैं। पकड़े गए आरोपी जावेद के साथ ही उसकी 30 बोर की टेलिस्कोपिक राइफल, उसके दो कारतूस, एक बाइक जावेद के अन्य आरोपी भाई इदरीस के कमरे में रखे फ्रिज से जंगली जानवरों का करीब 5 किलो कच्चा मांस और 12 बोर बन्दूक के पांच ज़िंदा कारतूस बरामद किए हैं। पकड़े गए आरोपियों की निशानदेही पर हमारी टीम ने समरधा की पहाड़ी पर चीतल की एक खाल और उससे लगी रायसेन की पहाड़ी पर नीलगाय के मांस टुकड़े और खून बरामद किया है। फिलहाल अन्य आरोपियों की सरगर्मी से तलाश की जा रही है। इस सफलतापूर्वक कार्रवाई में आरके चतुर्वेदी के साथ उड़नदस्ता टीम के डिप्टी रेंजर हरिशंकर शर्मा, वनरक्षक यशवंत परिहार, चिंतन तिवारी, भीम सिंह, बबलू कटारे सहित सूखी सेवनिया सर्किल के प्रभारी बी.एस. कीर, महेश चौहान, सुनील महतो, अम्बिका श्रीवास्तव व अन्य स्टाफ शामिल था।

वन्यप्राणी तेन्दुआ व पेंगोलिन के शिकार करने वाला गिरोह पर STF की सफलतापूर्वक कार्रवाई

मध्यप्रदेश वन्यप्राणी मुख्यालय को प्राप्त गुप्त सूचना के आधार वन्यप्राणियों के बड़े स्तर पर शिकार कर उसके अवयवों के अवैध परिवहन एवं अवैध व्यापार के विरुद्ध कार्यवाही करने हेतु स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स, वन्यजीव अपराध

नियंत्रण ब्यूरो एवं स्पेशल टास्क फोर्स (पुलिस) की जबलपुर स्थित इकाइयों द्वारा योजनाबद्ध तरीके से संयुक्त कार्यवाही करते हुये कुल 16 आरोपियों को अभिरक्षा में लेकर उसके पास से वन्यप्राणी तेन्दुए की खाल 04 नग एवं दुर्लभ वन्यप्राणी पेंगोलिन के स्केल्स लगभग 20 कि.ग्रा. एवं 02 नग चार पहिया वाहन।

अधिनियम की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत प्रकरण दर्ज किया गया।

उक्त प्रकरण में विवेचना जारी है सभी आरोपियों को माननीय विशेष टाइगर स्ट्राइक फोर्स न्यायालय जबलपुर में पेश किया गया। गिरफ्तार आरोपी कटनी-02, जबलपुर-02, उमरिया-04 डिंडौरी-08, जिले के निवासी हैं। उक्त गिरोह इन वन्यप्राणियों के अवयवों को तंत्र-मंत्र, जादू टोना पर विश्वास करने वाले व्यक्तियों को बेचा करते थे। इनके द्वारा तेन्दुओं का शिकार बिजली के तार से किया गया है। स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स के द्वारा पुनः आम जनमानस से अपील की जाती है कि वन्यप्राणियों के अवयवों के संबंध में समाज में फैली हुई भ्रान्तियां व अंधविश्वास से बचें तथा उक्त आपराधिक प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों/गिरोह के बहकावे में न आवें। उक्त कृत्य से जहाँ एक ओर निरीह व दुर्लभ वन्यप्राणियों के शिकार को बढ़ावा मिलता है।



केन्द्रीय रोपणी, परियट सामाजिक वानिकी वृत्त, जबलपुर

श्री ओम प्रकाश भलावी, रोपणी प्रभारी,
केन्द्रीय रोपणी, परियट, जबलपुर

केन्द्रीय रोपणी परियट जबलपुर से लगभग 35 कि.मी. की दूरी पर जबलपुर-अमरकंटक मार्ग पर मुख्य मार्ग से आमाखोह ग्राम से लगभग 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह रोपणी वनमण्डल (सा.) जबलपुर की पनागर परिक्षेत्र के बीट परियट के कक्ष क्रमांक आर.एफ. 55, 56 में स्थित है। यह रोपणी प्रसिद्ध पर्यटन स्थल परियट जलाशय के समीप है। इस रोपणी का पहुँच मार्ग पूर्णतः पक्का है। रोपणी की अन्य जानकारी निम्नानुसार है-



रोपणी का स्थापना वर्ष - 1959

रोपणी का क्षेत्रफल - 15.80 हेक्टेयर

सुरक्षा व्यवस्था - सम्पूर्ण रोपणी में चेनलिक फेंसिंग है।

सिंचाई व्यवस्था/जल स्रोत - 3 ट्यूबवेल, सौर ऊर्जा-3 नग, माइक्रोस्प्रिंकलर

उपलब्ध अधोसंरचना-वनरक्षक आवास गृह - 1 नग

भण्डार गृह - 2 नग

मिस्ट चेम्बर - 1 नग

पॉली हाउस - 2 नग

रेस्ट हाउस - 1 नग

ग्रीन नेट हाउस - 2 नग

वर्मी कम्पोस्ट पिट - 3 नग

बीज उपचारण प्लेटफार्म- 3 नग

पंप हाउस - 1 नग



रोपणी में उपलब्ध पौधों का विवरण :-

क्र.	जाति	मद का नाम		योग
		6397 लो. वा.	कैम्पा मद	
1	सागौन	5508	0	5508
2	बांस	4018	3500	7518
3	फलदार प्रजातियां	134658	53577	188235
4	औषधीय प्रजातियां	29859	23678	53537
5	अन्य मिश्रित प्रजातियां	59253	46434	105687
	योग	233296	127189	360485
मदर बेडों की संख्या				
	सागौन बेड			367
	बांस मदर बेड			141

वर्ष ऋतु 2020-21 में निवर्तित पौधों की संख्या -

क्र.	वन विभाग को प्रदाय पो. पौधे	वन विभाग को प्रदाय रूटशूट	अन्य विभाग को प्रदाय पौधे	निजी व्यक्ति/निजी संस्था को प्रदाय पौधे	योग
1	2	3	4	5	6
1	2,66,908	58,320	14,977	18532	3,58,737

रोपणी में वित्तीय वर्ष 2020-21 में सशुल्क विक्रित पौधों से प्राप्त राजस्व - 4,54,447 रु.

रोपणी में आबंटित नई तैयारी का विवरण :-

कैम्पा मद अन्तर्गत एन.पी.व्ही. मद से बिगड़े वनों के सुधार अन्तर्गत - 3.00 लाख पौधे

6397 सामान्य योजना अन्तर्गत पौधा तैयारी - 0.35 लाख पौधे

6397 सामान्य योजना अन्तर्गत सागौन मदर बेडों की नई तैयारी - 500 बेड्स

कार्यालय केन्द्रीय रोपणी, पट्टियट



मिस्ट चेम्बर - केन्द्रीय रोपणी, परियट में वर्ष 2012-13 में मिस्ट चेम्बर स्थापित किया गया था, जिसका आकार 10x5 मी. है। मिस्ट चेम्बर के अद्यतन कार्य अन्तर्गत इसमें कूलिंग पेड, फागिंग एरीगेशन सिस्टम, तापमान नियंत्रक, आर्द्रता नियंत्रक एवं एकजाँस्ट लगाए गये हैं। इसमें मुख्य रूप से वेजेटेटिव प्रोपोगेशन कार्य के अन्तर्गत कटिंग्स लगाना, ग्राफ्टिंग कार्य के साथ-साथ लेयरिंग संबंधित कार्य किये जाते हैं साथ ही इसमें विलुप्त प्रजाति के बीजों का अंकुरण भी कराया जाता है। वर्तमान समय में रोपणी में महुआ के 1220 पौधे, आंवला के 810 पौधे, चीकू के 120 पौधे एवं अन्य प्रजाति के 120 पौधों की ग्राफ्टिंग सफलतापूर्वक की गई। साथ ही पीले बांस, बोगनवेलिया, पाप्लस, पांकर, कुल्लू आदि के पौधे कटिंग्स के माध्यम से 2000 पौधे तैयार किये गए। ग्राफ्टिंग, कटिंग के अतिरिक्त नीबू के पौधों की लेयरिंग के माध्यम से तैयार किये गए हैं।



मिस्ट चेम्बर



ग्राफ्टेड महुआ

पॉलीहाउस - वर्तमान में रोपणी में कुल 2 पॉलीहाउस संचालित हैं जिनका निर्माण क्रमशः 2013-14, 2020-21 वर्ष में किया गया है। रोपणी में स्थित दोनों ही पॉलीहाउस नेचुरल वेंटीलेटेड पॉलीहाउस हैं, जिसमें फागिंग सिस्टम से सिंचाई की जाती है। इनमें मुख्य रूप से बीजों का अंकुरण कार्य किया जाता है। वर्तमान समय में पॉलीहाउस में शीशम, आंवला, हर्रा, बहेड़ा, हल्दू, मैदा, दहीमन आदि के बीज के अंकुरण प्राप्त कर पौधा तैयार किये जा रहे हैं।

वर्मी कम्पोस्ट यूनिट -केन्द्रीय रोपणी, परियट में वर्मी कम्पोस्ट निर्माण अन्तर्गत कुल 3 यूनिट स्थापित की गई हैं, जिनमें वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन किया जाता है जिनका विवरण निम्नानुसार है:-

रोपणी में वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन हेतु निंदाई के दौरान निकल कचरे को अर्ध डिकम्पोस कर वर्मी कम्पोस्ट बनाने में किया जाता है। पिटों की भरवाई के दौरान 60 प्रतिशत ताजा कच्चा ठण्डे गोबर एवं 40 प्रतिशत अर्ध डिकम्पोस कचरे का उपयोग किया जाता है। रोपणी में इन पिटो में आईसीनिया फोयटिडा/यूड्रिलस यूजेनी प्रजाति के केंचुए का उपयोग किया जाता है। साथ ही वर्मीवाश का उत्पादन कर उपयोग किया जा रहा है। वर्तमान में वर्मी कम्पोस्ट के उत्पादन को बढ़ाने हेतु 3.60X1.2X0.6 मी. आकार के प्लास्टिक के 25 पिटों की स्थापना की गई है। रोपणी में इन पिटों से वर्ष में लगभग 5 बार वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन किया जाता है।

क्र.	पिट संख्या	पिट साइज	उत्पादन क्षमता
1	8 नग	10X1X0.8 Mtr.	128 क्विंटल
2	7 नग	08X1X0.8 Mtr.	91 क्विंटल
3	5 नग	05X1X0.8 Mtr.	40 क्विंटल





आधुनिक सिंचाई व्यवस्था - वर्तमान में रोपणी की सिंचाई व्यवस्था अन्तर्गत सेक्टर क्रमांक 01 में माइक्रोस्प्रिंकलर की स्थापना की गई है। इसके अन्तर्गत कुल 400 बेडों के पौधों में माइक्रोस्प्रिंकलर से सिंचाई की जा रही है, जिससे कि पौधों में पानी की खपत कम होती है। रोपणी में वर्ष 2014-15 में 03 नग सौर पंप की स्थापना की गई है, जिससे सिंचाई कार्य सुचारु रूप से होती है।



रूट ट्रेनर से पौधा तैयारी - रोपणी में पॉलीथिन बैग्स के अतिरिक्त रूट ट्रेनर में भी पौधा तैयारी का कार्य किया जा रहा है। वर्तमान समय में 300 सी.सी. के 2700 रूट ट्रेनर एवं 150 सी.सी. के 1632 रूट ट्रेनर उपलब्ध हैं जिनमें पौधा तैयारी का कार्य किया जा रहा है। इनमें हर्रा, बहेड़ा, काला सिरस, सफेद सिरस, आंवला, करंज, शीशम आदि प्रजाति के पौधे रूट ट्रेनर में तैयार किये गए हैं।



सागौन बीज उपचारण - वर्तमान में रोपणी में सागौन उपचारण हेतु 03 नग प्लेटफार्म उपलब्ध हैं, जिनमें से 02 प्लेटफार्म में सागौन बीज उपचारण का कार्य किया जाता है। वर्ष 2019-20 के संग्रहित 77.00 क्विंटल सागौन बीज का उपचारण वर्ष 2020-21 के माह अगस्त से सितम्बर में किया गया है। उपचारण के दौरान दिन में 2-3 बार सागौन बीज की पलटाई का कार्य किया गया है। उपचारण हेतु विशेष रूप से ड्राइंग एवं शॉकिंग विधि का उपयोग किया गया है। उपचारण के उपरांत बीजों की ग्रेडिंग कार्य कर भण्डारण किया गया है।



MUNNA : The Legend

(by Dr. Sanjay Kumar Shukla and
Mr. Vijayrajan Muthu)

The words “CAT” & “PM” inscribed on his forehead were enough to identify Munna, an iconic male Tiger that had been largely responsible for putting Kanha onto the map of the world’s most popular Tiger spotting destinations. Munna’s sightings were the stuff of legend as he used to go through his daily chores in a nonchalant manner while remaining oblivious to the presence of tourists.



We recall a particular incident one fine day Munna was sighted resting beside a large boulder in Digdola. He woke up from deep slumber only after almost all the tourists had arrived at the scene, waiting to catch a glimpse. He then leaped onto the boulder and sat on it, making us wonder if he was conducting a survey of tourists. The herd of sambar deer bellowed and the troupe of langur kept crying hoarse until



Munna looked up at the trees and let out an ear shattering “aaaaaaaauuuummm”. What followed was pin drop silence. The denizens of the forest had perhaps realized that the King was in no mood to hunt.

Having made his maiden appearance as a full-grown adult in early 2006, it didn't take long for Munna to pose a serious challenge to overthrow Konda, the erstwhile dominant Male of Kisli. Munna went on to become the cynosure of all eyes, as a majority of Tiger shows (tourists on elephant back could watch tigers) during the period 2008-2011 starred him. A funny incident that comes to our mind is when on one a cold winter afternoon, his tiger show had ended with much fanfare and a message on the wireless set held by one of the mahavats declared “aaj ka tiger show samaapt hua” and Munna, who had been resting calmly until then, got up as if on cue and walked away into the dense forest !!!

Slowly but surely, Munna made inroads by eliminating his arch rivals Naak Kata as well as Banda and extended his territory upto Kanha meadows. By 2012-13, he had consolidated

his position as the undisputed King of Kanha, as his large home range fell under Kisli, Kanha as well as Sarhi range. Munna is widely believed to have sired litters with at least 4 – 5 different Tigresses, the prominent ones being Chhota Munna (T-29), Neelam (T-65) & Umarpani Male (T-30). A seasoned warrior, he was widely believed to have accounted for eliminating at least 7 different rivals in his lifetime.

By 2017, age seemed to have finally caught up with Munna as he was relegated to the fringe areas of the reserve and being partially incapacitated, he preyed upon cattle for survivals. Circa October 2019, in an unfortunate turn of events, Munna had to be captured and sent to Van Vihar National Park, Bhopal as he was believed to have killed a villager. While he spent his last days in captivity and was also provided medical aid from time to time, in March 2021, Munna breathed his last. While Munna maybe gone, his legend lives on forever in the fabled forests of Kanha.



चारागाह विकास कार्य ग्रीन इंडिया मिशन के अंतर्गत, श्योपुर वनमण्डल

श्री. के. रमन, अपर प्रधान मुख्य
वनसंरक्षक, ग्रीन इंडिया मिशन एवं
श्री. सुधांशु यादव, वनमण्डलाधिकारी,
श्योपुर

श्योपुर वनमण्डल का वन क्षेत्र 2,659.739 वर्ग किमी है जो कि श्योपुर जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्र 6,666.61 वर्ग किमी का 39.89% है। जिले में मुख्यतया करधड़ (*Anogeissus pendula*), सलई (*Boswellia serrata*), खैर (*Acacia catechu*) व मिश्रित वन है। वर्ष 2012 की पशुगणना के अनुसार श्योपुर जिले में 1,98,989 गौवंश, 1,03,390 भैसवंश, 95,348 भेड़/बकरियां, 2,120 अन्य हैं, जिस हेतु पशुओं के चारे की आवश्यकता एवं उपलब्धता का आंकलन सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण के द्वारा किया गया है।

जिले में कुल पशु इकाई 4,30,666 है जिनके लिए कुल चारे की आवश्यकता 4715792.70 क्विंटल है। जबकि, श्योपुर जिले की कुल चराई धारण क्षमता 341185 पशु इकाई है, जिस हेतु पशुओं के चारे की उपलब्धता आरक्षित संरक्षित वनक्षेत्र में 480000 क्विंटल है। जिले के पशुधन के साथ-साथ राजस्थान के मवेशियों की चारे पर निर्भरता, खिरकारी (कैटलकैम्प) की समस्या रहती है। स्थानीय ग्रामीण, मारवाड़ी, गुर्जर समुदाय पशुपालन कर दुग्ध उत्पादन से अपनी जीविकोपार्जन करते हैं। कार्य आयोजना, श्री अमित दुबे, 2020.30 में चारे की माँग की आपूर्ति हेतु 100 वन कक्षों में 28,821.25 हे. वन क्षेत्र को चारागाह विकास हेतु प्रस्तावित किया गया है।

वनमण्डल श्योपुर के वनक्षेत्र पर वास्तविक चराई क्षमता से अधिक चराई का भार है वनक्षेत्र एवं कृषि से केवल 79.22 प्रतिशत पशुधन के लिये ही चराई उपलब्ध है। वनमण्डल के 89481 पशु इकाई के लिये चारा उपलब्ध नहीं है इसकी पूर्ति हेतु वृक्षारोपण क्षेत्र एवं चारागाह विकास क्षेत्र को विकसित कर चारा प्राप्त किया जा रहा है, जिससे पशु इकाई हेतु चारा उपलब्ध हो सकेगा।



शुयोपुर वन मंडल के अंतर्गत ग्रीन इंडिया मिशन के विभिन्न सबमिशनो के तहत उपचारित 2177.52 हे. वन भूमि को चैनलिक फेंसिंग के द्वारा सुरक्षित कर सुरक्षित रखने से घास की पैदावार 5 से 6 गुना बढ़ गयी (तालिका 1)। इसमें लगभग 739.42 हे. क्षेत्र में 12 स्थलों पर सबमिशन 1(सी): रेस्टोरेशन ऑफ ग्रास लैंड के तहत उपचारित किए गए (तालिका 1)।

इस सबमिशन के तहत किए गए कार्य

1. क्षेत्र तैयारी के पूर्व क्षेत्र का सीमांकन व स्थल की स्थिति दर्शाने वाले जियो-कोऑर्डिनेट युक्त स्टिल व ड्रोन कैमरा से क्षेत्र का छायांकन किया गया।

2. सुरक्षा की दृष्टि से क्षेत्र को चैनलिक फेंसिंग से घेरा गया गया।
3. चारागाह क्षेत्र में 1X10 मी. आकार के 16,600 घास बेड का निर्माण किया गया। वर्षा ऋतु में पूर्व से तैयार घास स्लिप संख्या 24,83,000 का रोपण किया गया।
4. समतल क्षेत्रों में जुताई कर बीजों की बुवाई की गयी।
5. प्रत्येक चारागाह क्षेत्र में उपलब्ध रिक्त क्षेत्रों में 14 प्रजातियों के औसतन 2000 पौधों का रोपण किया गया।



क्षेत्र तैयारी के पूर्व क्षेत्र का सीमांकन व छायांकन



घास बेड का निर्माण



घास बीज रोपण

- ग्रीन इंडिया मिशन
सबमिशन 1(सी): रेस्टोरेशन
ऑफ ग्रासलैंड**
1. क्षेत्र तैयारी के पूर्व क्षेत्र का सीमांकन व छायांकन
 2. घास बेड का निर्माण
 3. घास बीज का रोपण
 4. घास स्लिप का रोपण
 5. घास की पैदावार
 6. घास कटाई व पूरा बनाई
 7. घास बीज का संग्रहण
 8. पूर्ण परिपक्व मुरजैना घास ले जाते ग्रामीण



घास स्लिप का रोपण



घास की पैदावार



घास कटाई व पूरा बनाई



घास बीज संग्रहण



पूर्ण परिपक्व मुरजैना घास ले जाते ग्रामीण



घास वितरण व्यवस्था

ग्रीन इंडिया मिशन के तहत किए गए रोपण क्षेत्रों तथा चारागाह विकास क्षेत्रों (कुल 34 वृक्षारोपण स्थल) में हुए चारा की वितरण व्यवस्था ग्राम वन समितियों की बैठक आयोजित कर निशुल्क घास प्रदाय हेतु समझौता पत्रक तैयार किया गया।

1. समिति सदस्यों को घास निशुल्क प्रदान की गयी।
2. घास की कटाई ग्रामीणों द्वारा की गई।
3. घास कटाई के दौरान बीज से उगे पौधों व रोपित पौधों को क्षति नहीं पहुँचाई गयी।
4. रोपण क्षेत्र से घास सिखोइज से निरीक्षण पथ तक लाई गयी जहाँ से लोडिंग वाहनों पर रख कर ले जाया गया ।
5. प्रत्येक हितग्राही को प्रदाय घास का विवरण पंजी में रखा गया।



वर्ष 2019 व 2020 के दौरान तैयार किए गए 34 उपचार क्षेत्रों से प्रदाय मुरजैना घास 68,795 किलो ग्राम व पशुओं के चारा योग्य घास 4,75,124 किलोग्राम घास (5,43,919 किलो ग्राम घास) का प्रदाय हितग्राहियों को किया गया। मुरजैना घास औसतन 15 रु. प्रति किलोग्राम के अनुसार लगभग 20,63,859/- रु. की घास ग्राम वन समिति के 1376 सदस्यों एवं 847 सदस्यों को पशुओं के चारा योग्य घास औसतन 2 रु. प्रति किलोग्राम के अनुसार लगभग 11,29,640/- रु. किलोग्राम प्रदान की गई।

कुल 2,223 वन समिति सदस्यों को राशि 31,93,499/- रु. का लाभ प्राप्त हुआ।



तालिका 1 वर्ष 2019 एवं 2020 में ग्रीन इंडिया मिशन के विभिन्न सबमिशनों के तहत किया गया चारागाह विकास का कार्य

क्र.	रोपण क्षेत्र का नाम	क्षेत्रफल	कक्ष क्रमांक (स्थल संख्या)	घास का प्रकार एवं अनुमानित मात्रा				कुल राशि				
				मुरजैना घास		पशु चारा योग्य घास						
				कुल सग्राहक	मात्रा 02 कि.ग्रा. प्रति पूरा	राशि 15/- प्रति कि. ग्रा.	कुल पूरा (संख्या)		मात्रा 1.50 कि.ग्रा. प्रति पूरा	राशि 02/- प्रति कि.ग्रा.		
वर्ष 2019												
1	कलसी	66.00	RF 112 (1)	38	28472	56944	854160	38	66435	9965	199305	1053465
2	फतेहपुर	103.50	PF 94 (2)	28	372	744	11160	33	23076	34614	69228	80388
3*	भीमलत पश्चिम	92.94	RF 142 (2)	24	759	1518	22770	32	7050	10575	21150	43920
4	भीमलत पश्चिम	177.19	RF 162 (2)	55	1595	3190	47850	0	0	0	0	47850
5	कालीतलाई	48.13	RF 100 (1)	22	422	844	12660	27	19256	28884	57768	70428
6	डेंगदा	130.35	RF 148 (3)	40	1889	3778	56670	45	35043	52564	105236	161906
7	कालीतलाई	99.00	RF 100 (2)	32	1183	2366	35490	34	32547	48820	97641	133131
8*	गोला पश्चिम	300.67	RF 154 (5)	400	2896	5792	86880	84	9697	14545	29091	115971
9	भीमलत पश्चिम	68.75	RF 142 (1)	12	385	770	11550	17	3870	5805	11610	23160
	योग	1086.52	19	651	37973	75946	1139190	310	196974	205772	591029	1730219
वर्ष 2020												
1	कलसी	66.00	RF 112 (1)	38	6066	12132	181980	38	14155	21235	42465	224445
2	गोला पश्चिम	38.55	RF 154 (1)	0	0	0	0	0	0	0	0	0
3	डेंगदा	167.33	RF 148 & 149 2)	53	1316	2632	39480	54	17986	26978	53958	93438
4	भीमलत पश्चिम	170.11	RF 141 (1)	10	315	630	9450	10	2160	3240	6480	15930
5	कालीतलाई	79.75	RF 110 (1)	9	248	496	7440	12	1224	1836	3672	11112
6	सारसिल्ला	99.25	PF 89 (1)	12	0	0	0	12	25125	37687	75374	75374
7	रामपुरा	100.00	RF 116 (1)	43	1284	2568	38520	19	6977	10465	20931	59451
8*	गोला पश्चिम	280.51	RF 162 (5)	219	6824	13648	204720	133	25629	38441	76891	281611
9*	भीमलत पश्चिम	89.49	RF 141 (1)	341	14769	29538	443079	259	86279	129470	258840	701919
	योग	1091.00	15	725	30822	61644	924669	537	179535	269352	538611	1463280
	महायोग	2177.52	34	1376	68,795	1,37,590	20,63,859	847	3,76,509	4,75,124	11,29,640	31,93,499

*वर्ष 2019 एवं 2020 में ग्रीन इंडिया मिशन के सबमिशन 1(c) Restoration of grass land के तहत किया गया चारागाह विकास



The Caring Father

(by Uttam Kumar Sharma, Field Director, Panna)

Introduction

Panna Tiger Reserve (PTR) has a famed history of tiger reintroduction. Out of 7 reintroduced tigers in year 2009 onwards, 5 are still surviving in wilderness of PTR. Tigress P213-32 is the second generation of panna progeny. It is the second cub of third litter of tigress P213 which in turn was the third cub of tigress T2. P213-32 was born in January 2016. She became mother in January 2019 when she gave birth to 4 cubs. Out of these 4 cubs, 2 are still surviving as 2 died after few months of their birth. As P213-32 was close to human habitation, regularly visiting nearby villages of Koni, Majholi and Gahadra, she was radio collared in February 2020 for better monitoring and protection. P213-32 gave birth second time sometime in September-October 2020. 4 healthy cubs were born. First photos of cubs were captured by camera trap setup in the area on 29th October 2020, when she was shifting the cubs from one place to another.



Picture 1: Tigress P213-32 Shifting Cubs- first Pics

P213-32 was raising the cubs very diligently. A male tiger P243 which was associated with P213-32 for a long time, surely more than 2 years, is considered the father of the cubs. P243 remains in the area and had occasionally been seen with P213-32 and cubs together.



1. Sad demise of P213-32

It was in the morning of 12.05.21 when tracking party monitoring tigress P213-32 reported something wrong with P213-32 as she was at the same place for quite a long time. In technical parlance, radio collar of P213-32 emitted 'Mortality signals' which prima facie is a result of non-movement for about 5-6 hours. Tracking party tried to disturb her from distance so as she moves. She did move but was very slow and was looking quite dull. For closer observation, elephant search party was dispatched immediately and by the evening pictures taken by elephant search party showed swelling in the left fore-limb of P213-32. Matter was immediately brought to the notice of Park Authorities and an unanimous decision to administer Antibiotic and pain killer was taken involving all concerned including veterinary doctor working in the Tiger Reserve. Prior permission of Chief Wild Life Warden was taken and on 13.05.21 evening, first dose was administered through 2 injectables. Some reduction in swelling was seen next day and second dose was given on 14.05.21 evening in the same manner. The tigress P213-32 was looking quite dull and wasn't much active but surely swelling had come down. We were keeping our finger crossed but unfortunately on 15.05.21 morning, the news of P213-32 death came as a shock to all of us. A beautiful tigress and a caring mother, left behind her four cubs alone. Postmortem did not reveal anything clearly about the cause of death. Samples of blood and body parts were taken and sent to 3 different laboratories, namely Nanaji Deshmukh Veterinary Science University, Jabalpur, MP; Indian Veterinary Research Institute (IVRI) Bareilly, UP and State Forensic science Laboratory, Sagar MP. She was cremated with full honor as practiced in Panna Tiger Reserve by giving handsome salute.



Picture 2: Sad Demise of Tigress P213-32

2. Four Orphaned Cubs

Death of tigress P213-32 was itself heavy loss to bear but now the major worry was her four orphaned cubs. Last time, they were seen on 10.05.21 morning with her mother and before that on 8th and 9th May 2021 sharing kill with her. As reported then, all cubs were looking healthy. For searching these cubs, immediately search parties involving elephants were formed and dispatched. 5 elephants and nearly 50 personnel were involved in searching. In addition, 23 Trap Cameras were also used at probable locations.

On 17.05.2021 at around 4:30 in the evening, a search party of 25 personnel moving on foot, led by Amar Singh Dy Ranger, could locate all 4 cubs. All cubs looked healthy, active and seemed not hungry or stressed, as reported. P243 was also found to be moving in very nearby area and kept at bay from ground search party by elephant party.

On 18.05.2021 evening and night, first camera trap pictures of all 4 cubs were received. All cubs looked healthy in pictures. About the cubs, they were by now at least 7 months old. If we assume that mother tigress shifts the cubs for the first time after birth after 3 weeks, then from the time when first picture of their shifting came on 29.10.2020, till now, they must be



over 7 months. And before the death of their mother P213-32, all had started eating kills with the mother and seen moving in the area with mother.



Picture 3: Orphaned cubs of Tigress P213-32

3. P243- The Caring Father

In the mean-time, behavior of male tiger P243, could not go un-noticed. As per the reported past behavior, P243 had remained together with P213-32 for more than 2 years. He was not seen with any other tigress. At present, he was seen at the cremation site of P213-32 within an hour after the cremation was over on 15.05.2021 evening. Next day on 16.05.2021, he was found sitting for long hours at the place where P213-32 died. The cubs were also assumed to be

located in and around that place. It was also observed that P243 was giving small calls which were interpreted as calls to cubs. P243 was also seen with the cubs of first litter of P213-32 earlier. Behavior of tiger P 243 strengthened the belief that his presence means no harm to cubs. Instead, it showed lots of promise with regard to safety of cubs. As per the field experience of ground staff, behavior of P243 is a positive sign for survival of cubs in the wild.

Picture 4: Male Tiger P243



4. Tiger Reserve Management at Work

All these information along with open and frank opinions of field staff and all concerned, helped in concluding that as male tiger P243 means no harm to cubs and instead cooperating



with them and we should, for time being, not interfere in this natural process of upbringing of cubs by picking them from that area and keeping them in some safe enclosure and later try to rewild them. It was further decided that for future monitoring, P243 should be collared and if possible, one cub may also be collared. Prior permission of CWLW was taken for both collaring and on 20.05.2021 morning at around 11 am, P243 was successfully collared. As cubs could not be located in suitable location, no cub could be collared.

On 20.05.2021 evening, some meat was delivered to the cubs by placing it on the way of their movement in frequented places. It was completely eaten by cubs in the night itself. In the intervening night of 21 and 22nd May, P243 hunted a Sambhar deer near the location of cubs. In the morning, pug marks of cubs were also found along with P243 near the Sambhar carcass. Camera trap pictures also revealed cubs eating Sambhar meat. Also at around 6 am in the morning, an elephant search party located all 4 cubs with P243 together resting near the kill. Photographs and video were taken. All these events indicated strongly that P243 is taking care of cubs and P243 was sharing kill with the cubs.



Picture 5: Male Tiger P243 with Cubs

Collaring of cub was yet to be done. There are certain issues including technical issues with regard to collaring of cubs. All cubs were together and P243 was also moving in the area,

put lots of problems of separating one cub from rest. Also as all cubs are in fast growing stage, it will be necessary to remove the collar within 2-4 months due to increase in neck size. Weighing all the options and need for the present, it was decided to postpone the collaring of cub till it becomes absolutely necessary.

5. Conclusion Drawn

It is confirmed that Tiger P243 is moving in this area near the cubs regularly. Following important conclusions can be drawn from the whole narrative:

1. All 4 cubs are healthy, active and safe after death of their mother Tigress P213-32 at the same place where their mother was keeping them.
2. All cubs are under the protection of tiger P243.
3. P243 has not in any manner of behavior or otherwise, posed any threat to the cubs.
4. Behavior of cubs also shows that they don't feel threatened by tiger P243 and follow him sometimes.
5. Tiger P243 is not only providing protection to cubs but also sharing kill with them.

As per the gathered and known information, at present there is no female tigress in the territory of tiger P243. But satellite collar data received from P243 and tigress P213-63 who is also collared, revealed that on 25.05.2021 at around 2am in the night, both were having movement in the same area of Gahadara Beat in a close proximity.



6. Future Course of Action

Till the moment of writing this narrative, all seem to be quite favorable for the survival of cubs in natural way in the wild without much interference from Tiger Reserve management side. But keeping all factors in mind, if cubs are to left in the wild to survive on their own as they are at present, following future challenges of safety and management of cubs will be there, which will require attention of Tiger Reserve management :

1. Cubs are 7-8 months old at present. As per the information available regarding tiger behavior, tiger cub normally starts hunting after the age of 12-13 months. Considering this as the base line, for next 4-5 months, it is to be monitored that cubs are protected and properly fed. In adverse condition, suitable actions in this regard may be planned.
2. Monitoring the behavior of male tiger P243 towards cubs for at least next 4-5 months is absolutely necessary. If there is any change in behavior of P243 which endangers the life of the cubs, suitable course of action needs to be planned beforehand.
3. If male tiger P243 comes in contact of any other tigress then it will be necessary to monitor the behavior of both P243 and tigress towards cubs. If there is any threat due to pairing or cubs are abandoned by P243 in this situation, suitable course of action needs to be planned.
4. And finally, If cubs survive and become capable of hunting after few months from now, then also their monitoring on long term basis may be taken up.

The prevailing situation has posed new challenges and has given new insights of tiger behavior. The situation has also opened good

opportunity to understand the behavior of orphaned cubs in wild along with their father and this will be really helpful in future for raising the orphaned cubs. Every day is a new learning for Tiger Reserve management and it holds further new insights and learning for future. Let's keep our finger crossed.

Picture 6: Few Latest Photograph of cubs of P213-32



सागौन रूट-शूट/ पौधों की रोपणी में तैयारी का प्रशिक्षण कार्यक्रम

म.प्र. राज्य वन विकास निगम के मंडल कार्यालयों के अधीनस्थ रोपणियों में, अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी वृत्तों में पदस्थ क्षेत्रीय अधिकारियों/कर्मचारियों को सागौन रूट-शूट व पौधों की रोपणी में तैयारी का प्रशिक्षण का कार्यक्रम दिनांक 27.02.2021 को सम्पन्न हुआ।

मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम के विदिशा-रायसेन (पैगयाई रोपणी) रामपुर-भतौड़ी (सांपना रोपणी), लामटा-बालाघाट (कनकी रोपणी), कुंडम-जबलपुर (बेलकुंड रोपणी) एवं खंडवा (राजौर रोपणी) परियोजना मंडलों में अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी वृत्तों में पदस्थ क्षेत्रीय अधिकारियों/कर्मचारियों को रोपणियों में सागौन रूट-शूट एवं पौधा तैयारी कार्य का प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर रूट-शूट एवं पौधा तैयारी के विभिन्न स्तरों के छायाचित्र तथा वीडियो भी प्रशिक्षणार्थियों को दिखाये गये। निगम के संभागीय प्रबंधकों ने प्रशिक्षणार्थियों को मागदर्शन दिया। इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों को रोपण क्षेत्र का भ्रमण भी करवाया गया।



विदिशा-रायसेन परियोजना मंडल, भोपाल (पैगुयाई रोपणी)

वन विकास निगम के विदिशा-रायसेन परियोजना मंडल की "पैगुयाई" रोपणी में सागौन रूट-शूट एवं पौधा तैयारी कार्य का क्षेत्रीय अधिकारियों/कर्मचारियों (भोपाल सर्किल, सागर सर्किल, रतलाम सर्किल) को प्रशिक्षण देने का कार्य निगम के उप संभागीय श्री डी.के.एस. भदौरिया व नर्सरी प्रभारी श्री के.पी. पाण्डे ने किया।

खंडवा परियोजना मंडल, खंडवा (राजौर रोपणी)

वन विकास निगम के खंडवा परियोजना मंडल, खंडवा की "राजौर" रोपणी में सागौन रूट-शूट एवं पौधा तैयारी कार्य का क्षेत्रीय अधिकारियों/कर्मचारियों (उज्जैन सर्किल एवं खंडवा सर्किल) को प्रशिक्षण देने का कार्य निगम के संभागीय प्रबंधक श्री चरन सिंह ने किया।



वन व वन्य प्राणियों की रक्षा एवं संवर्धन के उत्कृष्ट कार्य करने वाले म.प्र. राज्य वन विकास निगम के कर्मठ कर्मचारी पुरस्कृत

म.प्र. राज्य वन विकास निगम लि. में इस वर्ष गणतंत्र दिवस 2021 के शुभ अवसर पर वन व वन्य प्राणियों की रक्षा एवं संवर्धन के उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मठ कर्मचारियों को प्रशस्ति-पत्र एवं पारितोषक प्रदान कर, पुरस्कृत किया गया।

माननीय डॉ. कुँवर विजय शाह जी, वनमंत्री, मध्यप्रदेश शासन एवं अध्यक्ष म.प्र. राज्य वन विकास निगम ने वन एवं वन्य प्राणियों की रक्षा एवं संवर्धन हेतु उत्कृष्ट कार्य करने वाले खंडवा परियोजना मंडल के कर्मठ कर्मचारियों को गणतंत्र दिवस 2021 समारोह, खंडवा में प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये। इसमें श्री सचिन कैथवास, वनरक्षक को उत्कृष्ट रोपण कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार राशि रु. बीस हजार तथा श्री हरिशंकर मुकाती, वनपाल को उत्कृष्ट रोपण कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार राशि रु. पच्चीस हजार तथा श्री शीतल सिंह कुशवाह, उप वन क्षेत्रपाल को उत्कृष्ट रोपणी कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार राशि रु. पच्चीस हजार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री अनय द्विवेदी कलेक्टर खंडवा, श्री विवेक सिंह पुलिस अधीक्षक खंडवा सहित अन्य अधिकारीगण व कर्मचारी तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।



श्री राजेश श्रीवास्तव, वन बल प्रमुख म.प्र. शासन एवं श्री रमेश कुमार गुप्ता, निगम के प्रबंध संचालक ने प्रदेश की राजधानी में निगम के क्षेत्रीय कर्मठ कर्मचारियों को उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया। सीहोर परियोजना मंडल, सीहोर के श्री विनोद शर्मा, वनरक्षक को उत्कृष्ट काष्ठागार प्रबंधन कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार राशि रु. बीस हजार एवं विदिशा-रायसेन परियोजना मंडल, भोपाल के श्री मनीष दूर्वार, वनरक्षक को उत्कृष्ट रोपणी कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार राशि रु. बीस हजार एवं रामपुर-भतौड़ी परियोजना मंडल, बैतूल के श्री फिरोज खान, सहायक परियोजना क्षेत्रपाल को रोपणी कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार राशि रु. पच्चीस हजार एवं लामटा परियोजना मंडल, बालाघाट के श्री गोविन्द वासनिक, सहायक

परियोजना क्षेत्रपाल को उत्कृष्ट रोपण कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार राशि रु. पच्चीस हजार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

वन विकास निगम में दिनांक 18.08.2020 को सम्पन्न हुई, संचालक मंडल की 193वीं बैठक के आयटम क्रमांक 12 पर निगम के कर्मचारियों का वन एवं वन्य प्राणियों की रक्षा तथा संवर्धन हेतु किये जा रहे कार्यों में उनका मनोवल बढ़ाने एवं अपने कर्तव्यों के पालन में स्फूर्ति और उत्साह बनाये रखने के मंतव्य से उत्कृष्ट कार्य करने वाले निगम के कर्मठ अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत करने का निर्णय हुआ। फलस्वरूप निगम के कर्मठ अधिकारियों/कर्मचारियों को इस वर्ष गणतंत्र दिवस 2021 के शुभ अवसर पर पुरस्कृत किया गया है।



बांस कृषि के लाभ

निमाड़ क्षेत्र की पहचान नीम के पेड़ तथा मिर्च एवं कपास की प्रचलित फसलों से होती आई है। इस क्षेत्र को बांस के माध्यम से नई पहचान देने का बीड़ा खरगोन तहसील के मेनगांव के श्री विजय पाटीदार ने उठाया है। श्री विजय पाटीदार द्वारा अपने क्षेत्र में वर्ष 2019 में कटंग बांस के 4000 पौधे लगाकर उनकी खूब देखभाल की। इसका परिणाम यह हुआ कि दो ही वर्षों में उन्होंने सब्जी की खेती में पौधे को सहारा देने हेतु काम आने वाले 75 हजार रुपये के बांस के डंडों का उत्पादन कर लिया है।

श्री विजय पाटीदार को बांस के पौधे लगाने की प्रेरणा इस बात से मिली कि क्षेत्र की परम्परागत फसलों में काफी अधिक मेहनत करने के बाद भी कई बार घाटा सहन करना पड़ता था। इसलिए श्री पाटीदार लगातार इस खोज में लगे रहते थे कि ऐसी कौन सी फसल हो सकती है जो किसानों को कम मेहनत और कम रिस्क में अधिक लाभ दे सके। श्री पाटीदार की खोज बांस की फसल पर आकर समाप्त हुई। 2 वर्षों के अनुभव के आधार पर श्री विजय ने बताया कि बांस की फसल मौसम के सभी उतार-चढ़ावों से अछूती रह जाती है। श्री पाटीदार ने बताया कि क्योंकि बांस के पौधे लगाने पर राज्य बांस मिशन द्वारा 3 वर्षों में प्रति पौधा 120 रुपये का अनुदान दिया जाता है इसलिए किसान के लिए लागत बहुत कम रह जाती है और बांस की फसल पर किसी प्रकार की बीमारी अथवा कीड़ा नहीं लगने की वजह से उनके लिए महँगी दवाओं का एवं रासायनिक खादों का भी उपयोग अनावश्यक रहता है।



श्री विजय पाटीदार द्वारा बताया गया कि बांस लगाने के चौथे साल से प्रति भिरा न्यूनतम 10 बांस लगभग 40 फीट लम्बे प्राप्त हो सकते हैं और इस तरह 4 साल के 4000 पौधों से 40 हजार बांस प्राप्त होंगे। प्रति बांस रु. 100 के हिसाब से बिक्री होने पर लगभग 40 लाख की फसल प्राप्त होगी। इस क्षेत्र में लगने वाली किसी भी फसल से यह फसल कई गुना ज्यादा मुनाफा दिलाने वाली फसल होगी। श्री पाटीदार द्वारा बताया गया कि इन बांसों को ग्राहक स्वयं खेत तक आकर ले जायेंगे क्योंकि अच्छे बड़े खरीददार उनसे बांस खरीदने के लिए लगातार संपर्क कर रहे हैं। इन बांस की फसल की पैदावार के अलावा श्री पाटीदार द्वारा बांस के पौधों की कतारों के मध्य में इन्टरक्रॉपिंग के भी प्रयोग किये जा रहे हैं। बांस की कतारों के मध्य मिर्च, शिमला मिर्च, अदरक एवं लहसुन की फसल लगाई गई है एवं इन प्रयोगों के अनुभव से यह बताया कि बांस के पौधों की कतारों में होने से इन फसलों में पानी कम लगता है तथा गर्मी के विपरीत प्रभाव से बच जाने की वजह से उत्पादन अच्छा होता है।



श्री विजय पाटीदार के द्वारा बताया गया कि प्रतिदिन उनके पास बांस की फसल एवं उसके इन्टरक्रॉपिंग के प्रयोगों को देखने के लिए 4-5 किसान आते रहते हैं तथा सभी लोग इसको बेचने में आने वाली दिक्कतों के बारे में पूछते रहते हैं। **श्री विजय पाटीदार ने विश्वासपूर्वक बताया कि 2 साल के बाद जब उनकी पहली फसल बिक जायेगी तब वन विभाग के सामने बांस के पौधे लगाने वाले किसानों की लम्बी कतारें लग जायेगी।**

श्री विजय पाटीदार के द्वारा क्षेत्रीय किसानों को यह सलाह दी गई है कि अपने खेत के 10 प्रतिशत हिस्से में बांस की फसल को अवश्य लगावें क्योंकि यह कम रिस्क में लगातार अधिक मुनाफा देने वाली फसल होने के कारण किसानों के माथे से चिंता की लकीरें मिटाने के लिए पूरी तरह से सक्षम है। श्री पाटीदार के द्वारा बांस मिशन के माध्यम से पौधे प्राप्त किये गये थे। किसानों को नई दिशा एवं आशा देने के लिए श्री पाटीदार ने बांस मिशन को धन्यवाद भी दिया।

श्री पाटीदार द्वारा बताया गया कि बांस की फसल से चौथे साल में प्रति एकड़ 1000 क्विंटल बांस की सूखी पत्ती प्राप्त होती है। इस पत्ती को जमीन में गाड़कर उच्च गुणवत्ता की कम्पोस्ट खाद भी बनाई जाती है जिसका उपयोग किसान सब्जी एवं अन्य तरह की खेती के लिए कर सकते हैं। **यह बांस की फसल से सोने पर सुहागा होने जैसी बात है।** इसके अलावा श्री विजय द्वारा बताया गया कि क्षेत्र में शीतलता प्रदान करने के साथ ही साथ कार्बन डाई ऑक्साइड के तीव्रता को सोखकर बड़ी मात्रा में बांस हमें ऑक्सीजन भी प्रदान करता है। अर्थात्, जलवायु परिवर्तन की समस्या से निजात दिलाने के लिए बांस की फसल पूरी तरह से कारगर है।

एक एकड़ में कटंगा बांस लगाएं तीन पीढ़ियों तक पेंशन पाएं

श्री विजय पाटीदार द्वारा बताया गया कि कटंग बांस की उम्र लगभग 100 से 110 साल होती है। चौथे साल के बाद अच्छा कटंगा बांस प्राप्त होने लगता है तथा कटाई होने के बाद भी लगातार प्रतिवर्ष बांस मिलता रहता है। इस तरह से 3 पीढ़ियों के लिए पेंशन का जुगाड़ तो ही जायेगा। इसे कहते हैं कि - "हींग लगे न फिटकरी रंग भी चोखा आये।"

दीपक एवं शिल्पा गोयल के प्रयासों से सुन्देल की पथरीली पहाड़ी बनी बांस की हरी भूमि- भीकनगाँव तहसील के सुन्देल गाँव में लगभग 9 वर्ष पूर्व पदार्पण करके गोयल दम्पति के द्वारा किये गये अथक प्रयासों से मुरूमी, पथरीली, पहाड़ी को ठीक किया गया। अब उनके द्वारा बांस रोपण तथा बांस आधारित उद्योगों के माध्यम से क्षेत्र की जनता को बड़े पैमाने पर रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है।





बांस उद्यान, खरगौन

पेशे से इलेक्ट्रीकल इंजीनियर श्री दीपक गोयल ने एक दशक पूर्व अमेरिका की अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी छोड़कर जब स्वदेश लौटने का निर्णय लिया तो उनके भी दिमाग में भी बांस प्रजाति का उपयोग कर क्षेत्र की तस्वीर एवं तकदीर बदलने का ख्याल नहीं आया होगा। पूर्व में गोयल दम्पति द्वारा उस क्षेत्र में फल उद्यानिकी का कार्य प्रारंभ किया गया। लगभग 8 साल के अनुभव ने गोयल दम्पति को फल की खेती से जुड़ी हुई हाई रिस्क एवं मौसम पर निर्भरता ने स्थाई उद्योग स्थापना के लिए विवश किया। इस दिशा में गोयल की खोज बांस खेती, उस पर आधारित उद्योगों का प्रारंभ करने पर आकर रुकी। विगत लगभग 2 वर्षों से गोयल दम्पति द्वारा भारत के विभिन्न राज्यों में जाकर बांस की विभिन्न किस्में, उनकी उपयोगिता, उनकी खेती का तरीका, उन पर आधारित उद्योगों के बारे में जानकारी एकत्रित की गई तथा हर उद्योग का गहराई से विश्लेषण करने के उपरान्त श्री गोयल ने बांस की टुल्डा प्रजाति तथा उससे अगरबत्ती की काड़ी एवं अगरबत्ती निर्माण करने पर ध्यान केन्द्रित किया तथा 2 वर्ष पूर्व टुल्डा प्रजाति का रोपण कार्य प्रारंभ किया। इस वर्ष



कोरोना महामारी के पूर्व ही श्री गोयल द्वारा बांस मिशन से सब्सिडी प्राप्त कर बड़े पैमाने पर टुल्डा प्रजाति के बांस के पौधे त्रिपुरा से क्रय कर रोपित किये गये। त्रिपुरा से टुल्डा बांस के पौधे लाकर लगाने का कार्य लॉकडाउन के बाद भी जारी रहा। इस तरह से गोयल दम्पति द्वारा भीकनगाँव के ग्राम सुन्देल, सांईखेडी, बागदरी तथा सनावद तहसील के ग्राम गुन्जारी में लगभग 150 एकड़ क्षेत्र में बांस का रोपण सफलतापूर्वक किया गया है। साथ ही बांस मिशन की योजना के अंतर्गत सब्सिडी प्राप्त कर वर्ष 2020 में बांस की काड़ी से अगरबत्ती बनाने की 02 इकाइयां भी प्रारंभ की जा चुकी हैं।

इतने बड़े पैमाने पर किये गये बांस रोपण की देखरेख के लिए 30 परिवार लगातार कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा बांस काड़ी से अगरबत्ती बनाने की 02 इकाइयों में 70 महिलाओं को लगातार रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है। अधिकांश किसानों के दिमाग में यह बात आती है कि बांस का रोपण करने पर नियमित फसलें लेना बंद करना पड़ेगा। ऐसा नहीं है। श्री गोयल द्वारा अपने बांस रोपणों में इन्टरक्रोपिंग के रूप में अरहर, अदरक, अश्वगंधा, पामारोसा आदि फसलों का सफलतापूर्वक उत्पादन किया जा रहा है।



श्री गोयल ने बताया कि इन्टरक्रोपिंग करने से कुल लागत में कमी आती है तथा फसलों को दिये जा रहे खाद एवं पानी से बांस के पौधों की भी बढ़त काफी अच्छी होने के कारण समन्वित रूप से सभी फसलों में लाभ प्राप्त करना सहज संभव है। श्री गोयल द्वारा बताया गया कि बांस मिशन द्वारा दी जा रही सब्सिडी से पौधों की लागत तथा उनके लगाने एवं



देखरेख में आने वाले अधिकांश व्यय की पूर्ति हो जाने के कारण बांस मिशन की यह योजना किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है।

श्री गोयल द्वारा बताया गया कि इतने बड़े पैमाने पर किये गये बांस रोपण के कारण क्षेत्र के मध्यम एवं बड़े किसान बांस की खेती की ओर आकृष्ट हो रहे हैं क्योंकि जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव के कारण फलों की खेती में रिस्क बढ़ती जा रही है। बांस के पौधे इनकी तुलना में काफी सहिष्णु होने के साथ ही विपरीत परिस्थिति में अच्छी फसल पाने के लिए उपयुक्त है। इस कारण अन्य फसलों के साथ बांस की फसल लेने से कम लागत में अधिक मुनाफा लेना संभव है एवं साथ ही जलवायु परिवर्तन की संभावित जोखिम से भी पूरी तरह से बचा जा सकता है। श्री गोयल द्वारा बताया गया कि बांस के पौधे बड़े होने पर खेत का तापमान कम होगा जिसके कारण कम पानी में भी अच्छी फसल लेना सहज सम्भव होगा।

बांस की फसल लगाने से प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्ष लगभग 2500 क्विंटल बांस के पत्ते नीचे गिरते हैं जिससे बहुत उच्च गुणवत्ता की कम्पोस्ट खाद बनाई जाकर जमीन की उर्वरा शक्ति का विकास किया जा सकता है।

श्री गोयल द्वारा बताया गया कि बांस एक ऐसी फसल है जिसके रोपण में एक ही बार मेहनत एवं खर्च करना पड़ता है। इसके बाद लगभग 40 वर्षों तक टुल्डा बांस की खेती से लगातार बांस की फसल प्राप्त होती रहती है। श्री गोयल का अनुमान है कि पांचवें वर्ष इन पौधों से प्रति पौधा 10 बांस आसानी से काटे जा सकेंगे जिसकी संख्या आठवें वर्ष बढ़कर कर 15 बांस प्रति भिरे हो सकती है।

कई लोगों के द्वारा यह डर व्यक्त किया जा रहा था कि उत्तर-पूर्व राज्यों की ठण्डे मौसम की प्रजाति का बांस होने के कारण मध्यप्रदेश की गरम जलवायु क्षेत्र में इसका उत्पादन करना संभव नहीं है। श्री गोयल द्वारा स्वयं के किये गये प्रयोगों से इस आशंका को पूरी तरह से नकारा गया है। श्री गोयल ने बताया कि टुल्डा प्रजाति के बांस लगभग 2 वर्ष में सिंचाई एवं देखभाल मांगते हैं परन्तु उसके बाद पूरे मजबूती से स्थापित होने पर लगातार उत्पादन देने में सक्षम है।

श्री गोयल बताते हैं कि उनके द्वारा खरगोन जिले में इतने बड़े पैमाने पर किये गये बांस रोपण में कहीं भी उन्हें यह महसूस नहीं हुआ कि बांस की फसल लेना वन्यप्राणियों की दृष्टि से कुछ कठिन कार्य है। श्री गोयल द्वारा यह भी बताया गया कि मुख्यतः बांस की फसल के साथ अन्य अन्तरवर्ती फसलों के कारण जंगली सुअर बांस रोपणों में बहुत बड़े पैमाने में आकृष्ट नहीं हो रहे हैं। अर्थात् बांस एवं अन्तरवर्ती फसलों पर जंगली जानवरों का दुष्प्रभाव उतना ही महसूस किया जा रहा है जितना की अन्य फसलों पर।

गोयल दम्पति के द्वारा ग्राम सुन्देल की पहाड़ी से लगे इलाके में बांस रोपण एवं अग्रबत्ती निर्माण के उद्योगों के अलावा इस दिशा में और भी विकास करने की योजना तैयार की गई है। इसमें सर्वप्रथम प्लांटेशन से प्राप्त होने वाले टुल्डा बांस से अग्रबत्ती की काड़ी बनाने के बड़े उद्योग लगाने को पहली प्राथमिकता दी है। इसके अलावा आसपास के अन्य किसानों को अच्छी गुणवत्ता के टुल्डा बांस के पौधे उपलब्ध कराने हेतु एक हाईटेक बांस रोपणी स्थापित करना भी प्रस्तावित है। गोयल दम्पति द्वारा यह भी बताया गया कि बांस से अग्रबत्ती बनाने के उद्योग में बड़े पैमाने पर बांस का वेस्ट मटेरियल पैदा होता है, जिसका शत-प्रतिशत उपयोग करने हेतु बांस के कचरे से कोयला एवं भट्टियों में जलाने हेतु ब्रिकेट का निर्माण करने की भी योजना है ताकि बांस का कोई भी हिस्सा व्यर्थ में बरबाद न हो।

“सतत् पोषणीय एवं आत्मीय जीवन शैली से जन-जीवन में धनात्मक परिवर्तन लाना” यही श्री गोयल की हरी भूमि बेम्बो पार्क प्रकल्प का घोषमंत्र है। श्री गोयल द्वारा क्षेत्र के कृषकों को यह विश्वास दिलाया गया है कि परम्परागत कृषि एवं फल उद्यानिकी की चुनौतियों से घबराने से कुछ नहीं होगा। बांस भविष्य की फसल है। इसके साथ प्रयोग कर अलग-अलग फसलों के साथ इन्टरक्रोपिंग करने से रिस्क को बड़े पैमाने पर कम किया जा सकता है एवं लाभ को सतत् पोषणीय रूप से बढ़ाया जा सकता है।



5 जून, विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर माननीय वनमंत्री डॉ. कुँवर विजय शाह एवं वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा वृक्षारोपण



दुर्लभ प्रजाति गुग्गल (*Commiphora wightii*) के औषधीय गुण



स्थानीय नाम- गुग्गल

वनस्पतिक नाम- *Commiphora wightii*

कुल - बरसीरसी (Burseraceae)

गुग्गल का पौधा ग्वालियर वृत्त के अंतर्गत मुरैना, श्योपुर, भिण्ड जिलों में बीहड़ वनों में मुख्य रूप से पाया जाने वाला एक कटीली झाड़ी जैसा वृक्ष है जिसके तने में चीरा लगाने पर गोंद निकलता है, जिसका उपयोग रक्त वसा को कम करने, गठिया वात रोग एवं मोटापा आदि को कम करने में किया जाता है। गुग्गल में अत्यधिक औषधीय गुणों के कारण इसका दोहन लगातार किया जाता रहा है जिससे आज यह पौधा विलुप्ति के कगार पर है तथा इसकी संख्या दिन प्रतिदिन घटती जा रही है। इसलिए गुग्गल का संरक्षण एवं संवर्धन करना अति आवश्यक है। ग्वालियर वृत्त अंतर्गत श्योपुर रोपणी में गुग्गल के संवर्धन हेतु उचित तकनीक विकसित करने बाबत अतिरिक्त शोध कार्य किये जा रहे हैं ताकि गुग्गल की संख्या को बढ़ाया जा सके।

इको सेंटर रोपणी श्योपुर में गुग्गल के संवर्द्धन के लिए अनेक प्रकार के प्रयोग किए गए जिससे अलग-अलग मात्रा में पौधे विकसित हुए।

गुग्गल की शाखाओं का कलम काट कर जून-जुलाई के महीने में वर्मी कम्पोस्ट की अलग-अलग मिश्रण के साथ रोपण के बहुत अच्छे परिणाम रहे और लगभग 40 प्रतिशत तक जीवितता रही जबकि बीजों को उपचारित कर वर्मी कम्पोस्ट, मिट्टी तथा खाद के उचित मिश्रण में रोपण करने पर लगभग नहीं के बराबर सफलता रही।



तेन्दूपत्ता संग्राहक होंगे संबल योजना में शामिल- मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

तेन्दूपत्ता संग्राहकों को सिंगल क्लिक से
अंतर्गत किए गए 191 करोड़ 45 लाख रूपए

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि सभी तेन्दूपत्ता संग्राहकों को संबल योजना में सम्मिलित किया जाएगा। इससे संबल योजना के सभी लाभ और कठिनाई के समय परिवारों को मिलने वाली सहायता तेन्दूपत्ता संग्राहकों को भी उपलब्ध हो सकेगी। कोरोना के कठिन काल में तेन्दूपत्ता संग्राहकों को जारी लाभांश का वितरण इन परिवारों के लिए राहत भरा होगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान तेन्दूपत्ता प्रोत्साहन परिश्रामिक (बोनस) वितरण कार्यक्रम को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा निवास से संबोधित कर रहे थे।

दिनांक 17 मई 2021 को प्रदेश के 37 जिलों की 48 जिला यूनियनों को सिंगल क्लिक से 191 करोड़ 45 लाख रूपए की लाभांश राशि तेन्दूपत्ता संग्राहकों के खातों में सीधे जारी की गई। कार्यक्रम में वन मंत्री कुँवर विजय शाह और प्रमुख सचिव वन श्री अशोक वर्णवाल भी शामिल हुए। कार्यक्रम से 48 जिला यूनियन के सदस्य ऑनलाइन जुड़े।

ऑक्सीमीटर तथा थर्मामीटर की व्यवस्था के निर्देश

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा है कि कोरोना काल में तेन्दूपत्ता के संग्रहण और तेन्दूपत्ता जमा करते समय कोरोना से बचाव की सावधानियाँ बरतना आवश्यक है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने संक्रमण के प्रति सजगता और बचाव के लिए ऑक्सीमीटर तथा थर्मामीटर की व्यवस्था करने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि जिन व्यक्तियों को सर्दी, खांसी, जुकाम है, वे अपनी बीमारी नहीं छुपाएँ। किल कोरोना अभियान के अंतर्गत आने वाले कर्मचारियों को अपनी स्थिति की जानकारी दें। राज्य शासन ने ग्राम स्तर पर आइसोलेशन की व्यवस्था की है। जिन व्यक्तियों को इलाज की आवश्यकता होगी उनका निःशुल्क इलाज कराया जाएगा।



समितियों को जारी हुई राशि

कार्यक्रम में वर्ष 2017, 2018, व 2019 के तेन्दूपत्ता संग्रहण के बोनस के रूप में 191 करोड़ 45 लाख रुपए का वितरण किया गया। वर्ष 2017 की 40 करोड़ 56 लाख लाभांश की राशि 26 जिला यूनियनों की 81 समितियों को, वर्ष 2018 की 44 करोड़ 34 लाख लाभांश की राशि 34 जिला यूनियनों को 161 समितियों को और वर्ष 2019 की 106 करोड़ 55 लाख लाभांश की राशि 42 जिला यूनियनों की 593 समितियों को जारी की गई। उच्चतम लाभांश वाले प्रथम तीन जिले उमरिया, सिंगरौली और सतना हैं।

कोरोना काल में सहायक होगी राशि - वन मंत्री श्री शाह

वन मंत्री कुँवर विजय शाह ने कहा कि तेन्दूपत्ता संग्राहकों के खाते में 191 करोड़ 45 लाख रुपए बोनस के साथ

अगले 15 दिनों में कुल 650 करोड़ रुपए जारी किए जाएंगे। यह कोरोना की कठिन परिस्थितियों में इन परिवारों के लिए बड़ी सहायता होगी। वन मंत्री श्री शाह ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री चौहान द्वारा तेन्दूपत्ता संग्राहकों और वनवासियों के कल्याण और सहायता के लिए चलाई जा रही योजनाएं उनकी संवेदनशीलता का प्रतीक हैं।

मुख्यमंत्री ने तेन्दूपत्ता संग्राहकों से किया संवाद

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बैतूल की सुश्री शांति यादव, छतरपुर के श्री रामकृपाल यादव, सिंगरौली के श्री लोकाेश्वर बैगा, अनूपपुर के वीर साय सहित विदिशा और सीहोर के तेन्दूपत्ता संग्राहकों से संवाद भी किया।



Design Courtesy Mrs. Amanpreet Saluja



कोविड-19 महामारी परिस्थिति में वनमण्डल भोपाल द्वारा शासकीय निर्देशों का पालन करते हुए वैक्सीनेशन



राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

1) वानिकी अनुसंधान तकनीकी विषयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

(अ) मध्यप्रदेश वन विभाग के अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी, म.प्र. भोपाल के तत्वधान से सामाजिक वानिकी के 11 वन वृत्तों के मैदानी अमले हेतु वानिकी विषयों पर 05 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 19 मार्च, 2021 से 27 मार्च, 2021 के मध्य सामाजिक वानिकी वृत्त, जबलपुर, इंदौर, भोपाल, सागर एवं सिवनी में आयोजित किये गये। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सामाजिक वानिकी वृत्तों के विभिन्न नर्सरियों में कार्यरत लगभग 250 वन परिक्षेत्र अधिकारी, उप वन परिक्षेत्र अधिकारी तथा वनरक्षक सम्मिलित हुए। राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर से प्रशिक्षण देने हेतु डॉ. अर्चना शर्मा, वैज्ञानिक, डॉ. उदय होमकर, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी एवं डॉ. ज्योति सिंह, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रशिक्षणों में व्याख्यान तथा अनुसंधान तकनीकों की जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में रूट ट्रेनर में पौधों की तैयारी, रोपणियों में पौधों पर होने वाली बीमारियों तथा उनका निदान तथा आधुनिक विधि से नर्सरी प्रबंधन पर विस्तृत चर्चा की गई।





सामाजिक वानिकी वृत्तों के क्षेत्रीय अमले को रूट ट्रेनर में रूट तैयारी एवं रोपणी प्रबंधन पर प्रशिक्षण

(ब) माह जनवरी एवं फरवरी में तीन दिवसीय 01-01 प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सामाजिक वानिकी वृत्त, सागर एवं बैतूल के साथ-साथ सामान्य वनमण्डल, मण्डला (पूर्व-पश्चिम), सामान्य वनमण्डल, बालाघाट (उत्तर-दक्षिण), सामान्य वनमण्डल, बैतूल (उत्तर-दक्षिण एवं पश्चिम), सामान्य वनमण्डल, सागर (उत्तर एवं दक्षिण) से क्षेत्रीय स्तर के अधिकारी एवं कर्मचारियों को बीज संग्रहण से लेकर बीज तकनीक, रोपणी तकनीक, केंचुआ खाद, बीज प्रक्षेत्र का चयन, बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना एवं प्रबंधन हेतु प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन का कार्य किया गया। उक्त प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन में दो चरणों में 50 क्षेत्रीय स्तर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत बीज संग्रहण हेतु वृक्ष का चयन, बीज परिपक्वता की जानकारी, बीज संग्रहण एवं रोपणी में पौध तैयारी हेतु बीज की मात्रा का आंकलन, बीज की सफाई, ग्रेडिंग एवं भण्डारण, बुवाई पूर्व उपचारण एवं बीज की सुसुसावस्था की जानकारी एवं दूर करने की विधियाँ, बीज प्रयोगशाला का भ्रमण, मृदा प्रयोगशाला का भ्रमण, रोपणी तकनीक, रोपणी में कीट पतंगों का एवं फफूँदों का प्रकोप एवं बचाव, केंचुआ खाद निर्माण, उपयोग एवं लाभ, फलदार प्रजातियों की ग्राफिटिंग विधि से उच्च गुणवत्ता की पौध तैयारी, बीज प्रक्षेत्र का चयन, बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना एवं प्रबंध, बीज उत्पादन क्षेत्र का भ्रमण।



बीज प्रयोगशाला में बीज परीक्षण का प्रदर्शन



ग्राफिटिंग द्वारा पौध तैयारी





प्रशिक्षण कार्यक्रम अंतर्गत बीज उत्पादन क्षेत्र बनाने के लिए स्थल चयन हेतु क्षेत्रीय भ्रमण एवं भ्रमण के दौरान प्रबंधन पर आवश्यक जानकारी का प्रस्तुतिकरण तथा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरण

2) "औषधीय पौधों की रोपणी तकनीक" विषय पर मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के विशेष परिदृश्य में एक दिवसीय वेबिनार

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के द्वारा मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के कृषकों, छात्र एवं विभागीय अमले के लिए मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के विशेष परिदृश्य में एक दिवसीय वेबिनार की श्रृंखला का आयोजन किया गया। कुल तीन भागों दिनांक 17, 24 एवं 31 मई, 2021 को वेबिनार आयोजित कर हितग्राहियों को 20 प्रजातियों की रोपिणी तकनीकी की जानकारी प्रदाय की गई। जिसमें 220 प्रतिभागी लाभांविता हुये।

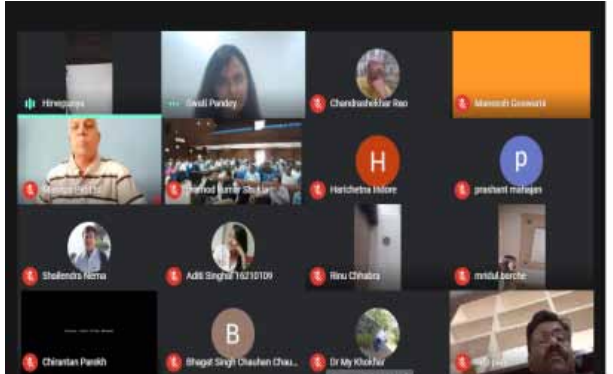
इसके अतिरिक्त मई एवं जून, 2021 में उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, पश्चिम क्षेत्र महाराष्ट्र

एवं केरियर महाविद्यालय, भोपाल जैसे अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित वेबिनार में विषय विशेषज्ञ के रूप में संस्थान के डॉ. उदय होमकर, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी द्वारा Cultivation, harvesting and value addition of commercially important medicinal plants, स्वास्थ्य रक्षक औषधीय गृह वाटिका - आज की आवश्यकता, औषधीय पौधे कालमेघ की खेती एवं Cultivation of medicinal plants : Need of the day पर प्रस्तुतीकरण किये गये।

"औषध पादप क्षेत्र हितधारक/क्रेता-विक्रेता सम्मेलन" विषय पर एक दिवसीय सेमिनार

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र, जबलपुर एवं स्वयंसेवी संस्था, सोलिडरिडाड, भोपाल के द्वारा संयुक्त रूप से मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के कृषकों, छात्र एवं विभागीय अमले के लिए एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन दिनांक 16 मार्च, 2021 को संस्थान के सभागृह में आयोजित किया गया, जिसमें सीधे रूप से 132 एवं आभासी रूप से 118 हितधारक तथा क्रेता-विक्रेता सम्मिलित हुए।





संस्थान के सभागृह में तथा आभासी रूप से सम्मेलन में भाग लेते हुए प्रतिभागी

3) होशंगाबाद वनवृत्त में वन्यप्राणियों द्वारा फसल हानि तथा शासन द्वारा क्षतिपूर्ति के प्रावधानों का अध्ययन

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा यह अध्ययन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों विधियों के द्वारा आंकलन किया गया। प्रत्यक्ष विधि द्वारा कृषि भूमि में हो रही फसल हानि में क्षतिग्रस्त पौधों/टिलर की गणना की गई एवं उसका प्रतिशत ज्ञात कर विश्लेषण किया गया। अप्रत्यक्ष विधि सर्वेक्षण द्वारा प्रश्नोत्तरी से 192 गाँवों के कृषकों से जानकारी प्राप्त कर विश्लेषण किया गया।

प्रश्नोत्तर सर्वे के अनुसार फसल की क्षति औसतन 45.76% दर्ज की गई। कृषि भूमि में प्रत्यक्ष रूप से वन सीमा से 0-2 किमी प्रभावी क्षेत्र में औसतन फसल क्षति 31.85% एवं 2-5 किमी प्रभावी क्षेत्र में औसतन फसल 18.51% दर्ज की गई।

फसल को क्षति पहुंचाने वाली मुख्यतः वन्यजीव प्रजातियां जंगली सुअर, ब्लैकबक, चीतल, सांभर एवं नीलगाय हैं।

अधिकतम फसल क्षति जंगली सुअर के द्वारा 64.13% एवं ब्लैकबक द्वारा 21.74% दर्ज की गई। वन्यप्राणियों द्वारा सर्दियों के मौसम में रात 8:00 बजे से सुबह 4:00 बजे के बीच तथा गर्मी के मौसम में रात 10:00 बजे से सुबह 6:00 बजे के बीच फसल क्षति की गतिविधि देखी गई।

अध्ययन के दौरान पशु विकर्षणों का प्रयोग भी किया गया। अल्पकालिक समाधान के रूप में पशु विकर्षक का सकारात्मक प्रभाव फसल क्षति की समस्याओं के लिए देखा गया है।

फसल क्षति मुआवजा के लिए प्रचलित प्रणाली

वर्तमान में फसल क्षति के मामले में, राजस्व बुक में निर्दिष्ट नियमों के अनुसार, राजस्व विभाग को जांच और मूल्यांकन के साथ-साथ वन्यजीवों द्वारा फसल क्षति के लिए मुआवजे का भुगतान के लिए अधिकृत किया गया है।

फसल क्षति मामलों के निराकरण की स्थिति को देखते हुए फसल क्षति के मामलों के लिए पूर्ववर्ती नियमों को संशोधित करने की आवश्यकता है।

मानव और पशुधन क्षति के मामले में पहले से स्थापित प्रणाली ठीक से काम कर रही है, लेकिन कृषकों के मतानुसार फसल क्षति के मामले का आंकलन समुचित तरह से अभिलेख नहीं किया जाता है। कृषक फसल क्षति से अत्यधिक विचलित हैं, क्योंकि फसल क्षति का प्रतिशत होने से कृषकों की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

25% से कम फसल क्षति पर क्षतिपूर्ति के लिए मुआवजे की राशि पर विचार नहीं किया जाता है। जबकि 25% से कम नुकसान के लिए भी फसल क्षतिपूर्ति के लिए मुआवजे के लिए विचार किया जाना चाहिए।

फसल क्षति प्रतिशत के संबंध में यह सुझाव है कि फसल क्षति मुआवजा के राजस्व मानदंडों को संशोधित करने की आवश्यकता है और फसल विशेष के लिए उक्त वर्ष के लिये राज्य शासन द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य के अनुसार क्षतिपूर्ति पर विचार किया जाना चाहिए।

फसल हानि के मुआवजे का दावा करने की प्रक्रिया कठिन एवं अधिकतर अनुपलब्ध एवं अप्रासांगिक है, जो मानव एवं वन्यजीव के मध्य संघर्ष एक महत्वपूर्ण कारण है।



फसल-क्षतिपूर्ति के विषय में सुझाव-

जागरूकता का निर्माण -

1. योजना के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने से कृषकों को योजना का लाभ मिलेगा।
2. स्थानीय संस्थाएं ग्रामीणों के बीच जागरूकता के निर्माण में सहयोग।
3. प्रभावित कृषकों को लाभान्वित करने के लिए इस योजना के उचित कार्यान्वयन हेतु राजस्व एवं वन विभाग के बीच बेहतर समन्वय होना चाहिए।
4. प्रभावित कृषकों की मांग अनुसार मुआवजा वन विभाग के माध्यम से होना चाहिए।

फसल क्षति को कम करने हेतु उपाय :

- * वन्यजीवों के लिए वनों के बफर क्षेत्रों में आवास सुधार एवं पानी की उपलब्धता का विकास।
- * तत्काल अस्थायी समाधान के रूप में पशु विकर्षक का उपयोग।
- * चैन लिंक फेंसिंग, सोलर फेंसिंग, बायो फेंसिंग, गेम-प्रूफ वॉल, पालतु कुत्तों के माध्यम से रखवाली।



वन्यजीवों द्वारा दिन एवं रात में कृषकों के खेतों में फसलों की हानि



संस्थान की डॉ. अंजना राजपूत, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी द्वारा कृषकों के खेतों में फसल हानि का सर्वेक्षण एवं परिचर्चा

4) नौरादेही वन्यप्राणी अभ्यारण के शावक स्वतंत्र रूप से शिकार करने में सक्षम हुए

नौरादेही वन्यप्राणी अभ्यारण, सागर में अप्रैल 2018 में वन विभाग द्वारा बाघों को पुनर्स्थापित किया गया था। प्रारम्भ में बाघों को बाड़े में स्थापित किया गया एवं 2 माह उपरान्त उन्हें स्वतंत्र रूप से अभ्यारण में छोड़ा गया। उक्त पुनर्स्थापित बाघों की निगरानी का कार्य विभागीय क्षेत्रीय अमले के सहयोग से संस्थान द्वारा परियोजना "Monitoring of re-introduced tiger (Panthera tigris) in Nauradehi Wildlife Sanctuary के अन्तर्गत अनुसंधान कार्य किया जा रहा है।

अभ्यारण में छोड़े गये बाघिन ने मई 2019 में 3 शावकों को जन्म दिया था, जिनमें दो मादा बाघ एवं एक नर बाघ है। बाघों एवं शावकों के पूरे कुनबे को एक साथ प्रत्यक्ष रूप से एवं कैमरा ट्रेप के फोटोग्राफ में अनेकों बार देखा गया है एवं बाघों द्वारा शावकों को शिकार के लिये प्रशिक्षित करते हुये तथा नर-मादा बाघ दोनों को ही शावकों की सुरक्षा पर विशेष



ध्यान देते हुये देखा गया है। शावकों के जन्म से लेकर सब-एडल्ट स्टेज तक बाघ और बाघिन द्वारा उन्हें सुरक्षा प्रदान करते हुए देखा गया। अवलोकन के दौरान यह पाया गया कि जब भी शावकों के पास वाहन अथवा हाथी होता था तब उन्हें दौड़कर नर बाघ के पास जाते देखा गया। शावकों की उम्र लगभग 2 वर्ष है एवं ये स्वतंत्र रूप से शिकार करने में सक्षम हो गये हैं। शावकों को शिकार करते हुये प्रत्यक्ष रूप से एवं कैमरा ट्रेप के फोटोग्राफ में देखा गया है। शावक क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से विचरण कर रहे हैं। निगरानी के दौरान विशेष रूप से देखा गया है कि जो क्षेत्र पूर्व में नर-मादा बाघों द्वारा उपयोग किया जाता था अब उस क्षेत्र में शावकों का विचरण है तथा नर-मादा बाघों ने अपना विचरण स्थान परिवर्तित कर लिया है। वर्तमान में शावकों की निगरानी रेडियो कॉलरिंग द्वारा की जाने की आवश्यकता प्रतीत हो रही है।

उक्त परियोजना में संस्थान की डॉ. अंजना राजपूत, मुख्य अन्वेषक के रूप में कार्य कर रही हैं तथा श्री अविनाश यादव, जे.आर.एफ. तथा पी.एस. भण्डारी, फील्ड असिस्टेंट द्वारा लगातार क्षेत्रीय कार्यों की निगरानी के कार्यों को सम्पादित किया जा रहा है।



रेडियो कॉलर किये हुए नर एवं मादा बाघ



मादा बाघ एवं तीनों शावक



दिनांक 23 जनवरी 2021 को मादा शावक एन-111 द्वारा शिकार

5) लाख कीट संरक्षण एवं वैज्ञानिक विधि से उन्नत लाख खेती के आर्थिक लाभ संबंधी अध्ययन

राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली से वित्त पोषित एवं भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रांची से प्राप्त "लाख कीट के आनुवांशिकी संसाधनों के संरक्षण पर नेटवर्क परियोजना" के अंतर्गत मध्यप्रदेश के 46 एवं महाराष्ट्र के 28 जिलों में लाख कीटों की उपस्थिति पायी गई है। लाख कीटों के अध्ययन एवं संरक्षण हेतु संस्थान में लाख कीट जीन बैंक निर्मित किया है।

लाख कीट जीन बैंक में वर्तमान में मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के 16 जिलों से प्राप्त लाख कीट को संरक्षित किया जा चुका है एवं शेष जिलों से भी विलुप्त हो रही लाख कीट प्रजातियों को संग्रहित कर संरक्षित किया जाएगा साथ ही लाख कीट प्रजातियों की उत्पादन क्षमता एवं गुणवत्ता का भी अध्ययन किया जाएगा एवं उच्च उत्पादक लाख कीट प्रजातियों को कृषकों तक पहुंचाया जाएगा जिससे कृषक अधिक उत्पादन कर लाभ प्राप्त कर सकें।

मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र राज्य के कृषकों को लाख की खेती से लाभान्वित करने हेतु संस्थान में लाख पोषक वृक्ष विहीन



क्षेत्रों एवं लाख की खेती करने के लिए इच्छुक कृषकों को सेमियालता के पौधे पर कुसमी लाख की खेती को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कृषिजलवायविक क्षेत्रों में पौधे की वृद्धि एवं उत्पादन क्षमता का अध्ययन किया जा रहा है। जिससे कृषक सेमियालता पर लाख की खेती पर अतिरिक्त आय प्राप्त कर आत्मनिर्भर भारत की कल्पना को साकार किया जा सके।

इस पौधे को कृषि बागवानी और वन सभी के साथ समायोजित कर प्रति एकड़ 3000-3500 पौधे रोपकर 22.5 लाख की शुद्ध आय प्राप्त की जा सकती है। लाख की खेती मुख्य रूप से सिवनी, बालाघाट, मंडला, होशंगाबाद, छिंदवाड़ा, कटनी, डिंडोरी, उमरिया एवं अनूपपुर जिलों के विभिन्न क्षेत्रों में की जा रही है एवं प्रदेश के 25-30 हजार कृषक लाख की खेती कर अतिरिक्त आय प्राप्त कर रहे हैं। परियोजना का संपादन परियोजना अन्वेषक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार, वैज्ञानिक एवं सह-अन्वेषक श्री अनिरुद्ध सरकार, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी के द्वारा किया जा रहा है।



संस्थान के लाख जीन बैंक में लाख के पौषक वृक्ष तथा विभिन्न प्रजातियों के लाख के कीटों के संरक्षण हेतु ग्रीन सेड नेट हाउस की स्थापना

6) लाख उत्पादन एवं स्थानीय वन्यप्राणियों की पहचान संबंधी एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर द्वारा कूनो वन्यप्राणी, वनमण्डल श्योपुर (म.प्र.) के आमंत्रण में वनमण्डल के ईको विकास समिति एवं सदस्यों हेतु लाख उत्पाद एवं वनमण्डल के क्षेत्रीय कर्मचारियों हेतु वन्यप्राणी प्रबंधन एवं पहचान संबंधी विषय प्रशिक्षण प्रदाय किया गया। एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला वनमण्डलाधिकारी श्री पी.के. वर्मा, कूनो वन्यप्राणी, वनमण्डल श्योपुर (म.प्र.) की अध्यक्षता में ईको सेंटर, ग्राम

ससईपुरा में दिनांक 22.06.2021 को आयोजित किया गया, जिसमें ईको विकास समिति एवं क्षेत्रीय वन अमला सहित 78 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार द्वारा संस्थान में संचालित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं भारतीय राल एवं गोंद, रांची से वित्त प्राप्त परियोजना लाख कीट के आनुवंशिकी संरक्षण एवं नेटवर्क परियोजना के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। संस्थान के अनुसंधान अध्येयता श्री बलराम लोधी एवं श्री राजेश बर्मन द्वारा कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को लाख कीट तथा उसकी खेती आदि की विस्तृत जानकारी तथा क्षेत्रीय प्रदर्शन के माध्यम से लाख संचारण की तकनीक से अवगत कराया गया एवं प्रतिभागियों से भी यह कार्य (on hands training) कराया गया।

डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार द्वारा कूनो वन्यप्राणी, वनमण्डल में पाये जाने वाले मांसाहारी एवं शाकाहारी वन्य जीवों एवं वन्यप्राणियों से कूनो वन्यप्राणी, वनमण्डल के क्षेत्रीय कर्मचारियों को कार्यशाला के माध्यम से परिचित कराया गया।

कूनो वन्यप्राणी, अभयारण्य में जल्द ही अफ्रीकी चीते के पुनर्वास कराया जा रहा है। जिस कारण श्योपुर जिले में पर्यटकों के आवागमन से ग्रामीणों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं साथ ही यदि इस क्षेत्र में लाख की खेती कर उसका प्रसंस्कृत कर उससे वस्तुओं का निर्माण कर यदि पर्यटकों को विक्रय किया गया तो ग्रामीणों को आय का एक अच्छा स्रोत प्राप्त हो सकता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुये वनमण्डल श्योपुर (सा.) एवं कूनो वन्यप्राणी वनमण्डल श्योपुर में लाख की खेती हेतु स्थानीय ग्रामीणों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्यों को लेकर वनमण्डलाधिकारी, श्योपुर (सा.), श्री सुधांशु कुमार यादव एवं वनमण्डलाधिकारी कूनो वन्यप्राणी वनमण्डल श्योपुर, श्री पी.के. वर्मा एवं वन परिक्षेत्राधिकारी श्योपुर, श्री कल्याण सिंह धाकड़ के साथ डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार, एवं सहयोगी दल के साथ विस्तृत चर्चा की गई थी। इसके पश्चात श्योपुर (सा.) वनमण्डल के अंतर्गत परिक्षेत्र श्योपुर एवं कराहल में क्षेत्रीय निरीक्षण कर प्रायोगिक स्तर पर लाख की खेती एवं लाख कीटों के संरक्षण हेतु आदर्श पोषक वृक्षों के बारे में अवगत करवाया गया।



माह जनवरी 2021 से माह जून 2021 की उत्कृष्ट उपलब्धियाँ

- * **ग्रामीणों को रोजगार देने का एक्शन प्लान** - आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश - रोडमैप 2023 के तहत विभाग द्वारा वर्ष 2021-22 में सात लाख 68 हजार ग्रामीणों को रोजगार देने का एक्शन प्लान तैयार किया गया है। संयुक्त वन प्रबंधन का नवीन संकल्प तैयार किया जा रहा है, ताकि ग्रामीणों की सहभागिता को अधिक प्रभावी बनाया जा सके। वृक्षारोपण प्रोत्साहन अधिनियम का प्रारूप तैयार किया जा चुका है। इसी प्रकार काष्ठ उद्योग प्रोत्साहन एवं संचालन अधिनियम का प्रारूप भी तैयार है।
- * **तेन्दूपत्ता संग्रहण** - राज्य लघुवनोपज संघ द्वारा संग्रहण वर्ष 2020-21 में अधिसूचित मात्रा 16.29 लाख के विरुद्ध 16.58 लाख मानक बोरा तेन्दूपत्ता संग्रहित कर गोदामीकृत किया गया है। संग्रहण कार्य हेतु 414.59 करोड़ रुपये की राशि संग्रहण परिश्रमिक के रूप में संग्राहकों के बैंक खातों में ई-पेमेन्ट के माध्यम से सीधे भुगतान की गई है।
- * **ग्रीन इंडिया मिशन में हुए कार्यों की विश्व बैंक द्वारा सराहना** - विश्व बैंक द्वारा प्रदेश में वनों के सुधार से कार्बन संचयन और जलागम क्षेत्रों का संरक्षण कर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, प्रशिक्षण-कौशल विकास के माध्यम से स्थानीय समुदाय की आजीविका को सुदृढ़ करने में ग्रीन इण्डिया मिशन योजना के योगदान को सराहा गया है। विश्व बैंक द्वारा शत-प्रतिशत अनुदान प्राप्त योजना इकोसिस्टम सर्विसेज इम्प्रूवमेंट परियोजना में 5367 हितग्राहियों की पहचान की जाकर 3202 हितग्राहियों को प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन द्वारा रोजगार के साधन के विकास आदि कार्य कराए गए हैं।
- * **प्रदेश में गिद्धों की गणना** - प्रदेश व्यापी गिद्ध गणना 06 फरवरी, 2021 को प्रदेश के सभी 16 वन वृत्त एवं 8 संरक्षित क्षेत्रों में किया गया। वर्ष 2021 में किये गये आंकलन के अनुसार मध्यप्रदेश में लगभग 9446 गिद्ध हैं, जो कि भारत के किसी भी राज्य से अधिक हैं।
- * **लघु वनोपज प्रजातियों के रोपण को प्राथमिकता** - विभागीय वृक्षारोपण में लघु वनोपज प्रजातियों के रोपण का दायरा 5 से बढ़ाकर 10 प्रतिशत कराए जाने का



निर्णय लिया गया है। मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा आठ हजार 290 हेक्टेयर क्षेत्र में लघु वनोपज प्रजातियों के रोपण की योजना स्वीकृत की गई है।

* **विन्ध्य हर्बल उत्पादों का ऑनलाइन विपणन** - लघु वनोपज प्रसंस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र (एम.एफ.पी. पार्क) बरखेड़ा पठानी, भोपाल द्वारा तैयार किये जा रहे विन्ध्य हर्बल उत्पादों का ऑनलाइन विपणन करने का निर्णय लिया गया है, जिससे इन उत्पादों की पहुंच प्रदेश के सभी अंचलों के साथ अन्य प्रदेशों में भी होगी।

* **वन्य प्राणियों द्वारा हुई क्षति प्राकृतिक आपदा घोषित** - राज्य शासन द्वारा वन्यप्राणियों द्वारा मकान में पहुँचाई गई क्षति को भी प्राकृतिक प्रकोपों से होने वाली हानि की श्रेणी में शामिल किया गया है। वर्तमान में प्रावधानित मानदंडों में संशोधन करते हुए अब किसी भी प्रकार के प्राकृतिक प्रकोप या आग लगने के कारण या वन्य प्राणियों द्वारा मकान पूर्ण रूप से नष्ट किया गया हो अथवा आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुआ हो तो उसे भी आर्थिक अनुदान सहायता दिये जाने का निर्णय लिया गया है। पीड़ित परिवार को वन्यप्राणियों से हुई हानि के लिए प्रति परिवार पांच हजार रुपये आर्थिक अनुदान तथा 50 कि.ग्रा. खाद्यान्न (गेहूँ/चावल) एवं पांच लीटर केरोसीन तात्कालिक सहायता के रूप में दिये जायेंगे।

* **कैम्पा के तहत कार्य** - कैम्पा मद के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2020-21 में उपलब्ध कराई गई राशि रुपये 500.00 करोड़ के विरुद्ध राशि रुपये 456.07 करोड़ का उपयोग प्रमुख रूप से क्षतिपूर्ति वृक्षारोपण, जलसंग्रहण क्षेत्रों के अंतर्गत मृदा एवं जल संरक्षण कार्य, वन्यप्राणियों के रहवास का विकास, बिगड़े वनों का सुधार, वनों की सुरक्षा तथा अग्नि से सुरक्षा आदि कार्यों में किया गया है।

* **राज्य बांस मिशन के तहत एफ.पी.ओ. का निर्माण** - राज्य बांस मिशन द्वारा राष्ट्रीय बांस मिशन के निर्देशानुसार प्रदेश के 6 जिलों- धार, बड़वानी, सतना, खण्डवा, सीधी तथा अलीराजपुर में एफ.पी.ओ. (Farmer Organization Producer) का निर्माण नाफेड द्वारा प्रारंभ कराया गया है।

* **अधोसंरचना एवं ग्रामीण विकास कार्य** - राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा अधोसंरचना एवं ग्रामीण विकास के अंतर्गत 22 कार्य हेतु 159.50 लाख रुपये माह जून, 2021 में स्वी.त किये गये है। इसके योजना के तहत सामुदायिक भवन निर्माण, तालाब निर्माण, तालाब गहरीकरण, पेयजल व्यवस्था, सड़क, रपटा निर्माण आदि कार्य किये जाते है।



वर्ष 2021 में लक्ष्य से अधिक तेन्दू पत्ते का संग्रहण

तेन्दूपत्ता संग्राहकों को 415 करोड़ रुपये का पारिश्रमिक वितरण किया गया। संग्रहण वर्ष 2021 में संग्रहित होने वाले तेन्दूपत्ते के 937 लाटों की अधिसूचित मात्रा 16.29 लाख मानक बोरा के अग्रिम निवर्तन हेतु ऑनलाइन निविदायें/नीलाम/ऑफर आमंत्रित की गईं। अग्रिम निवर्तन में 872 लाटों की 15.78 लाख मानक बोरे का रु 812.59 करोड़ के विक्रय मूल्य पर निवर्तन की गयी। शेष 65 लाटों में विभागीय संग्रहण कराया गया।

कोरोना संक्रमण की विपरीत परिस्थितियों में कोरोना गाइडलाइन का पालन करते हुए संग्रहण वर्ष 2021 में अधिसूचित मात्रा 16.29 लाख के विरुद्ध 16.60 लाख मानक बोरा संग्रहित कर गोदामीकृत किया गया। इस वर्ष जिला यूनियन सिंगरौली में सर्वाधिक संग्रहण

1.61 लाख मानक बोरा संग्रहित हुआ है।



तेन्दूपत्ता संग्राहकों को उनके द्वारा संग्रहित किए गए अच्छी गुणवत्ता की बीड़ी बनाने योग्य तेन्दूपत्ता का रु. 2500/- प्रति मानक बोरे की दर से संग्रहण पारिश्रमिक का भुगतान किया गया। संग्रहण कार्य हेतु संग्राहकों को लगभग रु. 415.00 करोड़ की राशि संग्रहण पारिश्रमिक के रूप में संग्राहकों के बैंक खातों में ई-पेमेंट के माध्यम से सीधे भुगतान की गई।



भगीरथ के प्रयासों का...!

कभी शीशम गवां बैठे कभी संदल गवां बैठे।
तरक्की के बहाने हम घने जंगल गवां बैठे।

गुजारी छांव में जिसके, दुपहरी जेठ की तपती,
वही हम कुदरती ममता भरा आंचल गवां बैठे।

हुई तब्दील बीहड़ में, पड़ी हैं घाटियां बंजर,
उन्हीं के बीच में बहती नदी कल-कल गवां बैठे।

कि आंधी, धूल, अंधड़ की लिये सूरत है पुरवाई,
बरसती थी कभी बनकर भरा बादल गवां बैठे।

सफलता पौध रोपण की भला है फ़ीसदी कितनी,
हमें जो मूल हासिल था वही हासिल गवां बैठे।

हताहत धावड़ा, सागौन ये कुलू बताते हैं,
बचाकर 'आज' हम अपना, हम अपना 'कल' गवां बैठे।

हजारों फुट खुदाई में अब उतना भी नहीं मिलता,
कभी बालिशत भर नीचे जो मिलता जल गवां बैठे।

उलीचा इस कदर हमने, किया कुछ इस तरह दोहन,
नदी, तालाब, झीलें सब हुये दल-दल गवां बैठे।

ये लाजिम है बचायें हम ये दोनों श्रेणियां, समझें,
न होगा सतपुड़ा बाकी जो विंध्याचल गवां बैठे।

बदौलत कारखानों से मिले अवशेष, कर्कट से,
भगीरथ के प्रयासों का वो गंगाजल गवां बैठे।

ये सूनी मांग सी नदियां, वो पर्णों के बिना शाखें,
'प्रकृति प्रेयसि' का हम काजल कभी कुंतल गवां बैठे।

रत्नदीप खरे
सामाजिक वानिकी, वृत्त झाबुआ
संपर्क 9826043425

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति (जनवरी-जून 2021)



श्री राजेश कुमार
(प्रधान मुख्य वन संरक्षक,
कार्य आयोजना)



श्री जसबीर सिंह चौहान
(प्रधान मुख्य वन संरक्षक,
उत्पादन)



श्री अतुल कुमार जैन
(प्रधान मुख्य वन संरक्षक,
अनु. वि. एवं लो.वा.)



डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा
(प्रधान मुख्य वन संरक्षक,
प्रशिक्षण एवं सदस्य सचिव
म.प्र. राज्य जैव विविधता
बोर्ड)

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति (जनवरी-जून 2021)



श्री राजेश श्रीवास्तव
(प्रधान मुख्य वन
संरक्षक, वन बल
प्रमुख)



श्री गिरिधर राव
(प्रधान मुख्य वन
संरक्षक, अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण)



श्री बी.बी. सिंह
(प्रधान मुख्य वन
संरक्षक, कार्य
आयोजना)



श्री एस.एस. राजपूत
(प्रधान मुख्य
वन संरक्षक,
लघुवनोपज)



श्री आनन्द कुमार
(प्रधान मुख्य वन
संरक्षक, अनु. वि.
एवं लो. वा.)



श्री संजय श्रीवास्तव
(मुख्य वन
संरक्षक, राजधानी
परियोजना)



अखबारों के आईने में

पर्यावरण • शहीदों के पौधों की तीन से पांच साल तक देखभाल करना होगी, फिर वन में लैबे जंगल प्रदेश में पौधों की 216 प्रजातियां ; इनमें 16 खत्म होने के कगार पर, इन्हें बचाने लैब में कृत्रिम रूप से पौधे बना रहे

राज्य में 216 प्रजातियों के पौधों की तीन से पांच साल तक देखभाल करना होगी, फिर वन में लैबे जंगल प्रदेश में पौधों की 216 प्रजातियां ; इनमें 16 खत्म होने के कगार पर, इन्हें बचाने लैब में कृत्रिम रूप से पौधे बना रहे

पर्यावरण विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इन पौधों की देखभाल के लिए वे एक विशेष लैब में पौधे बना रहे हैं।

पौधों की 216 प्रजातियां

पर्यावरण विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इन पौधों की देखभाल के लिए वे एक विशेष लैब में पौधे बना रहे हैं।

पर्यावरण विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इन पौधों की देखभाल के लिए वे एक विशेष लैब में पौधे बना रहे हैं।

2400 घंटों में महावृक्ष • पौरुषरोपण भी करेंगे, अगले दिन एकजदरी और फिर प्रदोष शुभ संयोग 20 को... गंगा दशहरा और गायत्री जयंती एक साथ, धार्मिक अनुष्ठान और खरीदारी होगी मंगलकारी

शुभ संयोग 20 अगले दिन एकजदरी और फिर प्रदोष शुभ संयोग 20 को... गंगा दशहरा और गायत्री जयंती एक साथ, धार्मिक अनुष्ठान और खरीदारी होगी मंगलकारी

शुभ संयोग 20 अगले दिन एकजदरी और फिर प्रदोष शुभ संयोग 20 को... गंगा दशहरा और गायत्री जयंती एक साथ, धार्मिक अनुष्ठान और खरीदारी होगी मंगलकारी

शुभ संयोग 20 अगले दिन एकजदरी और फिर प्रदोष शुभ संयोग 20 को...

45 प्रजाति के पौधे रोपेंगे • 20 साल में संजय सार्वजनिक वन्यजीव अभयारण्य में 20 हजार से ज्यादा पौधे पुलवामा के शहीदों की स्मृति में बनेगा उद्यान

पर्यावरण विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इन पौधों की देखभाल के लिए वे एक विशेष लैब में पौधे बना रहे हैं।

पर्यावरण विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इन पौधों की देखभाल के लिए वे एक विशेष लैब में पौधे बना रहे हैं।

इसी हफ्ते से ही सकटती है टूरिज्म • शाम 7 ते तल 10 बजे तक होगी नाइट सफारी, 13 किमी के ट्रेक पर 50 मिनट करायेंगे कैनाह, पेंच और बांधवगढ़ की तर्ज पर अब वन विहार में नाइट सफारी

इसी हफ्ते से ही सकटती है टूरिज्म • शाम 7 ते तल 10 बजे तक होगी नाइट सफारी, 13 किमी के ट्रेक पर 50 मिनट करायेंगे कैनाह, पेंच और बांधवगढ़ की तर्ज पर अब वन विहार में नाइट सफारी

इसी हफ्ते से ही सकटती है टूरिज्म • शाम 7 ते तल 10 बजे तक होगी नाइट सफारी, 13 किमी के ट्रेक पर 50 मिनट करायेंगे कैनाह, पेंच और बांधवगढ़ की तर्ज पर अब वन विहार में नाइट सफारी

इसी हफ्ते से ही सकटती है टूरिज्म • शाम 7 ते तल 10 बजे तक होगी नाइट सफारी, 13 किमी के ट्रेक पर 50 मिनट करायेंगे कैनाह, पेंच और बांधवगढ़ की तर्ज पर अब वन विहार में नाइट सफारी

सामाजिक जातिगत वन वन्यजीव वन विहार इकाई पर्यावरण की बोरोकार रोपणी में तैयार किए विलुप्त प्रजाति के पौधे, प्री-मानसून में होगा वितरण

सामाजिक जातिगत वन वन्यजीव वन विहार इकाई पर्यावरण की बोरोकार रोपणी में तैयार किए विलुप्त प्रजाति के पौधे, प्री-मानसून में होगा वितरण

सामाजिक जातिगत वन वन्यजीव वन विहार इकाई पर्यावरण की बोरोकार रोपणी में तैयार किए विलुप्त प्रजाति के पौधे, प्री-मानसून में होगा वितरण

सामाजिक जातिगत वन वन्यजीव वन विहार इकाई पर्यावरण की बोरोकार रोपणी में तैयार किए विलुप्त प्रजाति के पौधे, प्री-मानसून में होगा वितरण

वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ-डे आज... टाइगर के लिए जिनियाभर में मशहूर मन्न, फॉरेस्ट एडवेंचर के लिए वाइल्ड लाइफ एक्सप्लोर करने घूमें 'मोगली' का पेंच और 124 बाघों वाला बांधवगढ़

वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ-डे आज... टाइगर के लिए जिनियाभर में मशहूर मन्न, फॉरेस्ट एडवेंचर के लिए वाइल्ड लाइफ एक्सप्लोर करने घूमें 'मोगली' का पेंच और 124 बाघों वाला बांधवगढ़

वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ-डे आज... टाइगर के लिए जिनियाभर में मशहूर मन्न, फॉरेस्ट एडवेंचर के लिए वाइल्ड लाइफ एक्सप्लोर करने घूमें 'मोगली' का पेंच और 124 बाघों वाला बांधवगढ़

वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ-डे आज... टाइगर के लिए जिनियाभर में मशहूर मन्न, फॉरेस्ट एडवेंचर के लिए वाइल्ड लाइफ एक्सप्लोर करने घूमें 'मोगली' का पेंच और 124 बाघों वाला बांधवगढ़

भोपाल में चार साल में तीन गुना हुई गिद्धों की संख्या, 55 से बढ़कर 149 तक पहुंचा आंकड़ा

भोपाल में चार साल में तीन गुना हुई गिद्धों की संख्या, 55 से बढ़कर 149 तक पहुंचा आंकड़ा

भोपाल में चार साल में तीन गुना हुई गिद्धों की संख्या, 55 से बढ़कर 149 तक पहुंचा आंकड़ा

भोपाल में चार साल में तीन गुना हुई गिद्धों की संख्या, 55 से बढ़कर 149 तक पहुंचा आंकड़ा

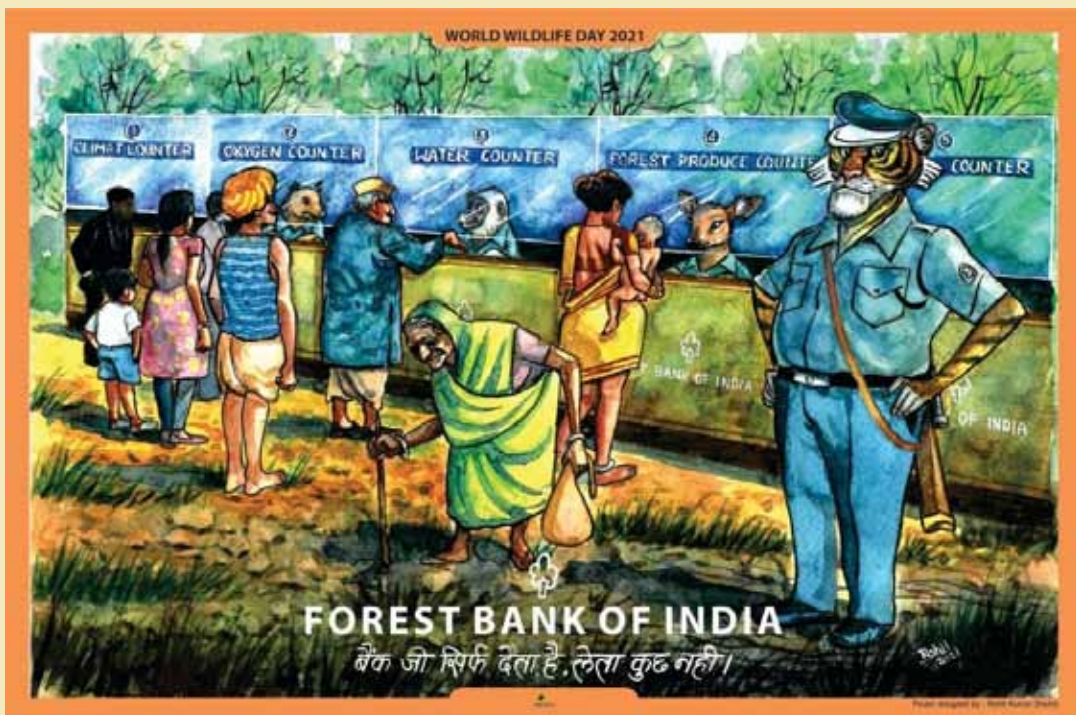
वन मंत्री डॉ. शाह की पहल पर आयोजित हुए टीकाकरण शिविर

वन मंत्री डॉ. शाह की पहल पर आयोजित हुए टीकाकरण शिविर

वन मंत्री डॉ. शाह की पहल पर आयोजित हुए टीकाकरण शिविर

वन मंत्री डॉ. शाह की पहल पर आयोजित हुए टीकाकरण शिविर

वनिकी गतिविधियां कार्टूनिस्ट की नजर







📷 Dr. Sanjay Kumar Shukla, APCCF, R&E, M.P.





72 वां गणतंत्र दिवस समारोह: प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री राजेश श्रीवास्तव द्वारा ध्वजारोहण

Published by:-APCCF (R/E) on behalf of MP Forest Department.
Printed by:-Super Printers & Plastics Works on behalf of Madhya Pradesh Madhyam.
Printed at :- Super Printers & Plastics Works, Plot No. 22 Nadeem House, Press Complex Zone 1, M P Nagar, Bhopal
Published at Room No. 140, Prachar Prasara Prakosth, Satpura Bhavan, Bhopal, M.P
Email:-dcfpracharprasar@mp.gov.in, Contact No. 0755-2524293, Editor:-Sanjay shukla, APCCF (R/E)